हिन्दी मासिक

दिसम्बर 2019

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

जन्नत भी मिल जाती है

जन सेवा यदि स्वार्थ रहित हो, रब की रिज़ा मिल जाती है
क्षमा याचना जो भी करता, क्षमा उसे मिल जाती है
करो इताअ़त प्यारे नबी की, रब राज़ी हो जायेगा
रब की रिज़ा जब मिल जाती है, जन्नत भी मिल जाती है

इदारा

वार्षिक ₹ 300/=

एक प्रति ₹ 30/=

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : tameer1963@gmail.com
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

सच्चा राही
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522–2740406 अथवा ईमेलः tameer1963@gmail.com पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

दिसम्बर, 2019 वर्ष 18 अंक 10

हज़रत बड़े पीर साहब (रह0)

ज़िक्र मुबारक उनका है जो पीर बड़े कहलाते हैं
जीलान के थे वह रहने वाले जीलानी कहलाते हैं
बेशक वह तो पीर बड़े हैं उम्मत में महबूब हैं
कश्फ़ो करामत बहुत थे रखते इसमें वह मशहूर हैं
अब्दुलक़ादिर नाम है उनका रब के बन्दे ख़ास थे वो
ग़ालिब उन पर हुब्बे रब था रहते उसकी याद में वो
बेशक वह तो पीर बड़े थे नबी की ताअ़त करते थे
नबी की ताअ़त करते थे वह नबी के वह तो आ़शिक़ थे
नबी पे रहमत और सलाम या रब उनकी आल पे भी
उनके सब अस्ह़ाब पे भी उनके सब उश्शाक़ पे भी

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सह़ाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	08
नाकामियाँ और कामयाबियाँ	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	10
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	13
सहाबा का मक़ाम व मरतबा	मौलाना सय्यिद बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	16
खिलाफते राशिदा और खुलफाए	हज़रत मौ0सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	24
इबरत व बसीरत और	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	27
हज़रत मुहम्मद सल्ल0	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	30
हज़रत अनस बिन मालिक अंसारी	अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा	34
मालद्वीप एक मुस्लिम देश	सैय्यद इनायतुल्लाह नदवी	38
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अनआमः

अनुवाद–

वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है उसके अलावा कोई माबूद (पूज्यनीय) नहीं, हर चीज़ उसी ने पैदा की बस उसी की बन्दगी (उपासना) करो और वही हर चीज़ का कारसाज़ है(102) निगाहें उसको नहीं पा सकती जब कि निगाहें उसके घेरे में हैं और वह बड़ा बारीक बीं और पूरी खबर रखने वाला है(103) तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास रोशन दलीलें आ चुकीं जिसने तो आंख खोल ली उसने अपना ही भला किया और जो अन्धा बना रहा तो उसका वबाल उसी पर है और मैं तुम पर कोई दारोगा नहीं हूँ[1](104) और हम इसी तरह फेर–फेर कर निशानियाँ बयान करते हैं और इसलिए कि वे कहें कि आपने पढ़ रखा है और इसलिए कि हम उसको जानने वालों के लिए खोल दें[2](105) आपके पालनहार की ओर से आपको जो वह्य (ईशवाणी) आती है उस पर चलते रहिए उसके अलावा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और शिर्क (बहुदेववाद) करने वालों से मुँह मोड़ लीजिए(106) और अगर अल्लाह की चाहत ही होती तो वे शिर्क न करते और हमने आपको उन पर कोई दारोग़ा नहीं बनाया और न ही आप उन के कामों के ज़िम्मेदार हैं[3](107) और जिनको वे अल्लाह के अलावा पुकारते है तुम उनको बुरा भला मत कहो कि वे बिना जाने बूझे दुश्मनी में अल्लाह को बुरा भला कहने लगें, इसी तरह हर उम्मत (समुदाय) के काम को हमने उनके लिए मनमोहक बना दिया है फिर अपने पालनहार की ओर उनको लौट कर जाना है फिर वह बता देगा कि वे क्या कुछ किया करते थे[4](108) उन्होंने बड़े ज़ोर शोर से अल्लाह की कसमें खाईं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ गई तो वे ईमान ले ही आएंगे कह दीजिए कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं, और तुम क्या जानों अगर वे आ भी गई तो वे ईमान लाने वाले नहीं[5](109) और हम उनके दिलों को और निगाहों को पलट देंगे जिस तरह वे पहली बार में ईमान नहीं लाये और हम उनको उनकी सरकशी में भटकता छोड़ देंगे(110) और अगर हम उनके पास फरिश्ते भी उतार देते और मुर्दे उनसे बात

करते और हर चीज़ ला कर हम उनके सामने कर देते तब भी वे हरगिज़ ईमान न लाते सिवाय इसके कि अल्लाह ही चाहता लेकिन उनमें अधिकतर लोग नादानी में पड़े हुए हैं[6](111) और इस तरह इंसानी और जिन्नाती शैतानों में से हमने हर पैग़म्बर के दुश्मन बना रखे थे जो धोखा देने के लिए एक दूसरे को चिकनी–चुपड़ी बातों की ताक़ीद किया करते थे और अगर आपका पालनहार चाहता तो वे ऐसा न कर पाते तो आप उनको छोड़ दीजिए वे जानें और उनका झूठ(112) और (वे यह मनमोहक बातें इसलिए करते हैं) ताकि आख़िरत को न मानने वालों के दिल उसकी ओर झुक जायें और वे उसमें मगन हो जाएं और वही ग़लत काम किये जायें जो वे कर रहे हैं(113) तो क्या मैं अल्लाह के अलावा किसी और को न्याय करने वाला खोजूँ जब कि उसी ने तुम्हें खुली हुई किताब दी, और जिन लोगों को हम किताब (पहले) दे चुके हैं वे जानते हैं कि यह (कुर्आन) बिलकुल ठीक ठीक आपके पालनहार की ओर से उतरा है तो आप शक करने वालों में न हो जाएं(114) और आपके पालनहार की बात सच्चाई और न्याय के साथ पूरी हो गई और अल्लाह की बातों को कोई बदल नहीं सकता और वह ख़ूब सुनने वाला जानने वाला है(115) और अगर आप दुन्या के अधिकतर लोगों की बात मान लेंगे तो वे आपको अल्लाह के रास्ते से हटा देंगे वे तो अटकल (गुमान) पर चलते हैं और वे केवल अटकल ही मारते हैं[7](116) बेशक आपका पालनहार खूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से हटा है और वह सही रास्ता चलने वालों से भी अवगत हैं(117) तो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो[8] उसे खाओ अगर तुम उसकी आयतों को मानते हो(118)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यानी खुदा हमें दिखाई नहीं देता लेकिन निशायाँ और प्रमाण हमारे सामने मौजूद हैं जो आँख खोल कर देखेगा खुदा को पा लेगा और जो अंधा बन गया उसने अपना घाटा किया मेरे ज़िम्मे नहीं कि मैं किसी को देखने पर विवश करूँ।

2. विरोधी सब कुछ सुन कर कहते थे कि यह अनपढ़ हैं निश्चित ही कोई उनको यह सब बातें सिखाता है और सच्चाई को जानने वाले लोग कहते कि निश्चित ही यह सब अल्लाह ही की ओर से है और यह पैग़म्बर सच्चे हैं।

3. और अल्लाह का फैसला ही होता तो सब मुसलमान होते लेकिन अल्लाह की नीति यही है कि उसने दुन्या को परीक्षा स्थल बनाया है सही रास्ता बता दिया है जो प्रयास करेगा उसको पा लेगा,

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिम्मे पहुँचा देना है ज़बर्दस्ती मुसलमान बनाना नहीं है।

4. यह पवित्र कुर्आन का आदेश है दूसरों के झूठे माबूदों (पूज्यों) को बुरा भला मत कहो इसका घाटा यह है कि वे पलट कर ना समझी में अल्लाह को बुरा भला कहने लगेंगे।

5. उन्होंने मांग की थी कि सफा पहाड़ सोने का बन जाए कुछ मुसलमानों को भी ख़्याल हुआ कि उनकी इच्छा पूरी कर दी जाए तो शायद वे ईमान ले आएं उसका जवाब भी है।

6. अगर उनकी मांगों के अनुसार बल्कि उससे बढ़ कर आसमान से फरिश्ते भी आ जाएं, सारी उम्मतें (समुदाय) जो गुज़र चुकी हैं और उनके पैग़म्बर सामने लाए जाएं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पुष्टि (तस्दीक़) करें तो भी वे मानने वाले नहीं सिवाय कुछ उन लोगों के जिनके बारे में अल्लाह की इच्छा हो चुकी।

7. अल्लाह की व्यवस्था यही है कि अच्छाई और बुराई की शक्तियां अपना काम करती रही हैं इंसानों और जिन्नातों में शैतानी प्रवृत्ति रखने वाले बात को मोहक शैली में बनाते रहते हैं ताकि वे लोग जो आख़िरत में विश्वास नहीं रखते और सांसारिक जीवन में डूबे हुए हैं वे उनके बहकावे में आ जाएं जहां तक पैग़म्बरों और उनकी बात मानने वालों का संबन्ध है वे ऐसे लोगों से बहुत दूर रहते हैं और उनके धोखे को खूब समझते हैं।

8. यह आयतें इस पर उतरीं कि काफ़िर कहने लगे कि मुसलमान अपना मारा खाते हैं और अल्लाह का मारा नहीं खाते, यह शैतानी प्रवृत्ति रखने वालों की चिकनी चिकनी बातें थीं, आगे साफ़ कहा जा रहा है कि सबको मारने वाला वही है बस जिस पर उसका नाम लिया जाए और ज़बह किया जाए वह खाओ, इसके और भी फ़ायदे बयान किये जा सकते थे कि जिसको ज़बह किया जाता है उसका सब ख़ून बह जाता है और वह गंदगी से पाक हो जाता है और जो अपनी मौत मरता है उसकी सारी गंदगी उसके गोश्त में मिल जाती है इसलिए वह हराम है, अल्लाह तआ़ला ने यह उपाय बयान करने में बजाए यह कह दिया कि ईमान वाले हो तो बात मानो, उसकी हिकमत तुम्हारी समझ में आये या न आये इससे यह नियम सामने आ गया कि मसलहत (युक्तियां) तलाश करना ग़लत नहीं किन्तु पालन को उस पर निर्भर न करना चाहिए।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

शगुन और रमल का बयानः-

हज़रत मुआविया बिन हकम रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया या रसूलुल्लाह मुझे इस्लाम लाये हुए थोड़ा जमाना गुज़रा है अब अल्लाह तआ़ला के फज्ल से इस्लाम काल है लेकिन अभी हम में कुछ लोग ऐसे हैं जो काहिनों के पास जाते हैं, आपने फरमाया तुम न जाना, मैंने अर्ज किया कुछ लोग ऐसे भी हैं जो शगुन लेते हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह एक चीज है जिससे वह लोग अपने दिल में पाते हैं तो उनको चाहिए कि यह ख्याल उनको काम से न रोके, मैंने अर्ज किया कुछ लोग ऐसे भी हैं जो खत (लकीर) खींचते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया एक नबी लकीर खींचते थे तो अगर लोगों का खत उनके खत के मुवाफिक है तो ठीक है। (मुस्लिम)

तीन हराम चीज़ेंः-

हज़रत अबू मस्ऊद बद्री रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुत्ते की कीमत और दुष्कर्म की उजरत (मजदूरी) और काहिन की शीरीनी (चढ़ावे) की मुमानियत फरमाई है।

(बुखारी—मुस्लिम)

फाले नेक का आदेशः-

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ना मुतअद्दी (संक्रमण रोग) कोई चीज़ है न शगुन , हाँ फाल मुझे पसंद है, लोगों ने अर्ज किया फाल क्या चीज़ है आपने फरमाया फाल एक अच्छा कलिमा है।

(बुखारी—मुस्लिम)

छुवा छूत कोई चीज़ नहींः-

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बीमारी लग जाने की कुछ हकीकत नहीं और अशुभ शगुन लेने की भी कोई हकीकत नहीं, और नहूसत किसी चीज़ में हो सकती है तो घर, औरत, और घोड़े में हो सकती है।

(बुखारी—मुस्लिम)

अर्थात घर की नहूसत तंगी और पड़ोसियों की खराबी है। औरत की नहूसत दुर्व्यवहार व बेदीनी है। घोड़े की नहूसत सवार को बैठने न देना और शरारत करना है।

हज़रत बुरैदा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने शगुन का जिक्र किया गया, आपने फरमाया सब से अच्छी चीज़ फाल है उससे कामिल मुसलमान के इरादे को लड़खड़ाहट नहीं होती, और जब तुम कोई नागवार बात देखो तो कहोः अनुवाद— ''ऐ अल्लाह

तेरे अलावा कोई भलाई लाने वाला नहीं, और तेरे अलावा कोई बुराई को दूर करने वाला नहीं, और तेरे अलावा न किसी में ताक़त है न कुव्वत''।

(अबू दाऊद)

फोटो ग्राफर की सजाः–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो लोग तस्वीरें बनाते हैं उन पर कयामत में अजाब होगा और उनसे कहा जायेगा कि उन तस्वीरों में जान डालो।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी सफर से तशरीफ लाये और मैंने दरवाजे पर एक पर्दा डाल रखा था जिसमें तस्वीरें थीं जब आप की नजर उस पर्दे पर पड़ी तो आप के चेहर–ए–मुबारक का रंग बदल गया और फरमाया ऐ आयशा कियामत में सबसे जियादा अ़ज़ाब उनको होगा जो अल्लाह की पैदा की हुई चीज में नकल उतारना चाहते हैं, तो हमने उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये और एक या दो तकिये बनाये।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है फरमाते थे कि फोटोग्राफर आग में डाला जायेगा और जितनी तस्वीरें उसने बनाई हैं उन सब में जान डाल दी जायेगी वह उस पर अजाब करेंगी हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 कहते हैं कि अगर तस्वीरें बनाना जरूरी समझो तो बेजान चीजों की तस्वीरें बनाओ जैसे पेड़ वगैरह।

(बुखारी–मुस्लिम)

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही"की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

रहमतें उन पर मुदाम

शुक्र है अल्लाह का है करम अल्लाह का
तोबा की तौफीक है सज्दों की तौफीक है
रब से ली है लौ लगा हुब्बे दुन्या दी भुला
हुब्बे रब हुब्बे नबी दिल में मेरे है बसी
करता जब बैअो शिरा रब है मुझ को देखता
दस्त बकारो दिल बयार कर लिया अपना शिआर
क़ब्र में जब जाऊँगा सुख वहाँ मैं पाऊँगा
हश्र के मैदान में अर्श की मैं छांव में
वाँ नबी को पाऊँगा मुतमइन हो जाऊँगा
वह मुझे बख्शाएंगे खुल्द में भेजवाएंगे
रहमतें उन पर मुदाम और हों लाखों सलाम

❖❖❖

नाकामियाँ और कामयाबियाँ

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस संसार में शायद ही कोई इंसान गुज़रा हो जिसको नाकामियों से वास्ता न पड़ा हो, कभी कभी तो नाकामी बड़ी कामयाबी का साधन बन जाती है, किसी उर्दू कवि ने क्या अच्छी बात कही है:—

सुर्ख़ुरु होता है इंसा ठोकरें खाने के बाद
रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद

वह कहता है कि इंसान नाकामी की ठोकरें खाने के बाद कामयाबी की खुशियाँ पाता है, इसके उदाहरण में वह मेंहदी को प्रस्तुत करता है कि पत्तियों से लड़कियों के हाथ लाल नहीं होते, लेकिन जब वही मेंहदी की पत्ती पत्थर पे पिस जाती है और फिर उसको लड़कियाँ अपने हाथों में लगाती हैं तो वही मेंहदी अब लाल हो कर निखर पड़ती है, इसी तरह इंसान नाकामी की ठोकरें खाने के बाद जब संभाला लेता है तो कामयाबी से दो चार होता है।

हम यहां अपने जीवन की असफलताओं का वर्णन न करके केवल सफलताओं का वर्णन करेंगे कहीं कहीं असफलताओं का वर्णन भी आ सकता है।

मैंने मार्च सन् 1948 में प्रथम श्रेणी में मिडिल पास किया, उस वक्त मिडिल में फारसी भी पढ़ाई जाती थी, यद्यपि फारसी की केवल तीन पुस्तकें पढ़ाई जाती थीं, ''आमदनामा, गुलज़ारे दबिस्तां और करीमा'' लेकिन उस्ताद ने इन किताबों को इस तरह पढ़ाया था कि मैं फारसी में बात चीत कर लेता था, उर्दू बहुत अच्छी थी और अंक गणित में तो मैं प्रसिद्ध था। चक्रवर्ती के ''आला हिसाब'' बड़ी आसानी से हल करता था, मिडिल पास करने के बाद पिता जी ने मेरी शिक्षा रोक दी, और घर के काम में लगा दिया, जिस पर मुझे भी खेद रहा और साथियों को भी।

खेती के काम में भी अपनी मेहनत से ख्यात प्राप्त किया, 1951 ई0 में पिता जी का देहान्त हो गया, अब मैं अपनी खेती के काम में लग गया परन्तु अनुभव न होने के कारण अनाज बहुत कम पैदा कर पाता, मेरा छोटा भाई क़ियामुद्दीन जवान हो चुका था, उसकी शादी कर दी थी। मेरा वह भाई बहुत नेक था, खेती का काम उसे हवाले करके मैंने एक दीनी मदरसा ''मदरसा व खानक़ाह अबू अहमदिया'' गुलचप्पा कलाँ जिला बाराबंकी में पढ़ाने का काम शुरु किया, मैं उर्दू और हिसाब पढ़ाता

था। पवित्र कुर्आन मैंने नहीं पढ़ा था, जिसका मुझे अत्यधिक खेद था, उसी मदरसे में मैंने शाम के वक्तों में कुर्आन मजीद पढ़ना और कण्ठस्थ करना शुरु किया, दिन में पढ़ाता और रात में कुर्आन याद करता, अब मुझे अत्यधिक आभास होने लगा कि मैं पवित्र कुर्आन समझता क्यों नहीं हूँ, मुझे इसे समझना चाहिए, इसके लिए मैं रात को रो रो कर दुआयें माँगता।

सन् 1960 ई0 में, मैं वह मदरसा छोड़ कर ''ह़ज़रत मौलाना अली मियाँ साहब रह0'' के इशारे पर नदवे आ गया, और मुझे उम्मीद हुई कि अब यहां अरबी सीखने की और कुर्आन समझने की कोई शक्ल निकल आयेगी, मगर अफसोस यहां भी कोई शक्ल न निकली, मैं दुआयें करता रहा कि अल्लाह तआला मुझे कुर्आन का इल्म दे दे।

मैं नदवे के जूनियर सेक्शन जहाँ मिडिल तक शिक्षा दी जाती थी उसमें दीनियात और अरबी के मज़ामीन भी पढ़ाये जाते थे, उसमें मैं टीचर था, उस विभाग के हेडमास्टर मुहम्मद ह़सन खाँ अर्शी थे, वह मेरे कामों से अत्यधिक प्रसन्न थे, मैं उर्दू फारसी और हिसाब बड़ी कामयाबी के साथ पढ़ाता था उस वक्त उस विभाग में कोई क्लर्क न था, इसलिए आफिस का काम भी मेरे हवाले रहा।

जनाब अर्शी साहब के रिटायर्ड होने के पश्चात मैं हेडमास्टर नियुक्त किया गया, जिसे मैं बहुत अच्छी तरह चलाता रहा, अब मुझे ख़याल हुआ कि मैं केवल मिडिल पास हूँ मुझे इस बड़े इदारे में काम करने के लिए कुछ और सनदें हासिल करना चाहिए, अतएव मैंने सन् 1968 ई0 में प्राइवेट इम्तिहान दे कर हाई स्कूल पास किया, अब मेरी समझ में आया कि मैं और पढ़ सकता हूँ, अतएव दिन में पढ़ाता और रात में अध्ययन करता, इस तरह मैंने इण्टर पास किया, प्रथम श्रेणी में बी0ए0 पास किया, 59 प्रतिशत से उर्दू में एम0ए0 पास किया सन् 1978 ई0 में पी0एच0डी0 की डिग्री भी प्राप्त कर ली, परन्तु अरबी न सीख सकने का मुझे अब तक खेद रहा और मैं दुआएं करता कि ऐ अल्लाह! मुझे पवित्र कुर्आन का इल्म प्रदान कर।

मुझे मालूम हुआ कि सऊदी अरबीया के रियाज़ नगर में एक ऐसी संस्था है जिसमें ग्रेजुएट लोगों को अरबी सिखाई जाती है, मैंने उसमें प्रवेश के लिए अपने हाथ से अंग्रेज़ी में प्रार्थना पत्र लिख कर और उस वक्त के ''अल–बअ़सुल–इस्लामी'' के एडीटर मौलाना सय्यिद मुहम्मद अलह़सनी से सिफारिश लिखवा कर रियाज़ यूनिवर्सिटी को भेज दिया इस लिए कि वह संस्था ''माहदुल–लुग़तुल–अरबिया

'' जो रियाज़ यूनिवर्सिटी के अंडर में थी।

अल्लाह की मरज़ी स्कॉलरशिप के साथ मंजूरी आ गयी, मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि अब मैं कुर्आन की भाषा अरबी सीख सकूँगा, अल्लाह की मदद से मैं 1979 ई0 के आख़िर में रियाज़ पहुँच गया और दाख़िला ले लिया, यह दो साल का कोर्स था मैंने बड़ी मेहनत से पढ़ा और 95 प्रतिशत से यह कोर्स पास किया। यहाँ मुझे इतनी अरबी तो आ गयी कि मैं बेतकल्लुफ अरबी बोल लेता था और लेटर भी लिख लेता था लेकिन अभी कुर्आन समझने में कठिनाई थी, माहद पास करने के बाद वहां का नियम था कि कहीं और प्रवेश नहीं मिल सकता था लेकिन एक सऊदी दोस्त की सिफारिश और प्रथम श्रेणी में बी0ए0 पास होने के आधार पर मुझे एम0ए0 में दाख़िला मिल गया, वहां उस वक़्त एम0ए0 चार साल का था, एम0ए0 में मुझे तफ़्सीर और हदीस के सब्जेक्ट में दाख़िला मिला, वहां एम0ए0 में मक़ाला लिखना अनिवार्य होता है और उस मक़ाले पर खुले आम तलबा और उस्तादों के बीच मुनाक़शा (विवेचना) होता है, मैंने यह कोर्स बड़ी मेहनत से पढ़ा और 1985 ई0 के आख़िर में मक़ाला प्रस्तुत कर दिया, मुझे वहां कि एम0ए0 की तफ़्सीर व हदीस में डिग्री मिल गयी। अब मैं कुर्आन तो समझने लगा लेकिन कुर्आन के उलूम का जब अध्ययन किया तो मुझे लगा कि यह अथाह समुद्र है आदमी अगर इन उलूम को प्राप्त करनेके लिए सारा जीवन लगा दे तब भी यही लगेगा कि इस ज्ञान में अभी मैं शुरु ही में हूँ। लेकिन अल्लाह का शुक्र है कि जो कुछ सीखा उससे मुझ को शांति प्राप्त हुई। उसी दौरान मैंने दोनों बेटों और एक भाई हाफिज़ मुहम्मद वसीम नदवी और बाज़ दूसरे अ़ज़ीज़ों को वहां के माहदुल लुग़ा में दाख़िल करवा कर दो साला कोर्स पूरा करवाया इस दौरान उन सबको ह़ज करने का भी अवसर मिला।

उस समय वहां एम0ए0 के छात्रों को बीवी का वीज़ा भी दिया जाता था अतएव मैंने अपनी पत्नी का विवाह प्राप्त करके आख़िर के दो साल साथ रखा, इस दौरान मुझे पांच बार ह़ज करने और सात बार उमरे के सफ़र पर जाने का अवसर मिला हर बार मदीना भी जाना हुआ, मेरी पत्नी ने भी दो हज़ किये, उसी दौरान सन् 1982 ई0 में मैंने अपने माता जी को हज़ कराया, निःसंदेह यह वह सफलताएं हैं जो मेरे जीवन की यादगारें हैं।

सन् 1985 ई0 के अंत में मैं अपने देश वापस आ गया और 1987 ई0 से फिर नदवे में पढ़ाने का काम शुरु

शेष पृष्ठ .....33...पर

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत (आज्ञापालन) व महब्बत में क़ौम का कल्याण है:–

प्राचीन धर्मों ने जीवन को दो ख़ानों (दीन व दुन्या) में बाँट दिया था एक दीनदार दूसरे दुन्यादार लोग, जो न केवल एक दूसरे से जुदा थे और उनके बीच एक दुराव था बल्कि वह एक दूसरे से संघर्षरत थे। उनके नज़दीक दीन व दुन्या में खुला विरोध और घोर द्वेष था। जिसको इनमें से किसी एक से मेलजोल पैदा करना हो, उसको दूसरे से सम्बन्ध विच्छेद और एलान जंग करना ज़रूरी था। कोई इन्सान एक समय में इन दोनों नवकाओं में सवार नहीं हो सकता था। रोज़ी–रोटी कमाना गफ़लत और खुदा को भूले बिना, हुकूमत धार्मिक व नैतिक शिक्षाओं की अनदेखी किये बिना और दीनदार (धार्मिक) बनना दुन्या छोड़े बिना सोचा भी नहीं जा सकता था। ज़ाहिर है कि इन्सान की प्रवृत्ति में आराम तलबी और आनन्द है। धर्म की ऐसी परिकल्पना जिसमें दुन्या के किसी जायज़ लाभ, तरक्की और सरबुलन्दी, ताक़त और हुकूमत की गुंजाइश न हो बहुसंख्यकों के लिए स्वीकार्य नहीं। नतीजा यह हुआ कि दुन्या के सभ्य, बुद्धिमान, योग्य और व्यवहारिक इन्सानों की बड़ी तादाद ने अपने लिए ''दीन'' के बजाये ''दुन्या'' को चुना और उसने इस पर अपने को राजी कर लिया। यह हर प्रकार की धार्मिक उन्नति से निराश हो कर दुन्या की प्राप्ति और उसकी तरक्की में लग गयी। दीन व दुन्या के इस विरोधाभास को एक मज़हबी हक़ीक़त समझ कर इन्सानों के अनेक वर्गों ने आम तौर पर मज़हब को छोड़ दिया। राजनीति और सरदारी ने मज़हब के प्रतिनिधि चर्च से बग़ावत की और अपने को इसकी हर पाबन्दी से आज़ाद कर लिया। इन्सान ''बेजंजीर हाथी'' और समाज ''बे नकेल ऊँट'' हो कर रह गया। दीन व दुन्या की इस दुई और दीनदारों तथा दुन्यादारों की इस प्रतिद्वन्दिता ने न सिर्फ यह कि मज़हब व नैतिकता के असर को सीमित व कमज़ोर और मानव जीवन और मानव–समाज को उसकी बरकत व रहमत से वंचित कर दिया। बल्कि उस इल्हाद (दीन से फिर जाना) व लादीनियत (अधर्मता) का दरवाज़ा खोला जिसका सबसे पहले योरोप शिकार हुआ, फिर दुन्या की दूसरी क़ौमें, जो योरोप की विचारधारा अथवा सत्ता के प्रभाव में आयीं इससे प्रभावित

हुई कोई कम, कोई अधिक वर्तमान संसार की वस्तुस्थिति जिसमें मज़हब व अख़लाक़ का पतन और भोग विलास अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई है, इसी दीन व दुन्या के भेद का नतीजा है।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह महानतम चमत्कार और इन्सानियत के लिए महानतम भेंट आपकी सारे जहानों के लिए रहमत होने का मज़हर (रूप) है कि आप पूरे तौर पर रसूले वहदत (एकता के दूत) हैं और एक साथ ''बशीर'' (खुशख़बरी देने वाला) और ''नज़ीर'' (डराने वाला) हैं। आपने दीन व दुन्या के विरोधाभास के नजरिया (दृष्टिकोण) को ख़त्म करके पूरी ज़िन्दगी को इबादत में और भूतल को एक विशाल इबादतगाह (पूजा स्थल) में बदल दिया। दुन्या के इन्सानों को संघर्षरत कैम्पों से निकाल कर सद्कर्म, जनसेवा और अल्लाह की प्रसन्नता हासिल करने के एक ही मोर्चे पर खड़ा कर दिया। यहां दुन्या के पहनावे में दरवेश (सन्त), शाही जुब्बः में फ़क़ीर व ज़ाहिद, तलवार और तस्बीह के एक साथ रखने वाले, रात के इबादत गुज़ार और दिन के घुड़सवार नज़र आयेंगे। और उनको इसमें किसी प्रकार का विरोधाभास महसूस नहीं होगा।

छठी क्रान्ति यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अभ्युदय (बेअसत) से पहले इन्सान अपने लक्ष्य से बेख़बर था। उसको याद नहीं रहा था कि उसको कहां जाना है? उसकी क्षमताओं का असल मैदान और उसकी कोशिशों का असल निशाना क्या है? मनुष्य ने कुछ अस्पष्ट लक्ष्य और अपनी कोशिशों के लिए कुछ छोटे–छोटे दायरे बना लिये थे, उनमें उनकी क्षमतायें ख़र्च हो रही थीं। कामयाब और बड़ा इन्सान बनने का मतलब सिर्फ यह था कि मैं धनी बन जाऊँ, शक्तिमान और हाकिम बन जाऊँ। बड़े से बड़े इलाक़े (क्षेत्र) और अधिक से अधिक इन्सानों पर मेरी हुक्मरानी हो। लाखों आदमी ऐसे थे जिनकी कल्पना की उड़ान, साज–सज्जा, रंग व राग, लज्जत व स्वाद चौपायों की नकल से बुलन्द नहीं होता था। हज़ारों इन्सान ऐसे थे जिनकी सारी बुद्धि अपने समय के दौलतमन्दों और ताक़तवरों तथा दरबारों में खुशामद या बेमक़सद शायरी से दिल खुश करने में खर्च हो रही थी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मानव जाति के सामने उसकी वास्तविक मंज़िल ला कर खड़ी कर दी आपने यह बात दिलों में बिठा दी कि सृष्टा की सही मारफत (पहचान) उसकी जात व सिफात (गुण) और उसकी कुदरत व हिकमत युक्ति का सही ईमान व

यक़ीन की प्राप्ति, खुदा का प्रेम, उसको राजी करना और उससे राज़ी हो जाना, इस अनेकता में एकता की तलाश, इन्सान की वास्तविक सौभाग्य है। अपने अन्तःकरण को सशक्त बनाना, ईमान व यक़ीन की दौलत से मालामाल होना, मानव–सेवा द्वारा ख़ुदा को राजी करना और कमाल व तरक्की की उस सीढ़ी तक पहुंच जाना जहां तक फरिश्ते भी नहीं पहुंच सकते, इन्सान के प्रयासों का असल मैदान है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अभ्युदय के बाद दुन्या की रुत बदल गयी, इन्सानों के मिजाज़ बदल गये, दिलों में खुदा की मुहब्बत का अंगारा भड़का, खुदा प्राप्ति की ललक आम हुई, इन्सानों को एक नई धुन खुदा की सृष्टि को खुदा से मिलाने और उसको लाभ पहुँचाने तथा खुदा को राजी करने की लग गयी, जिस तरह बसन्त या बरसात के मौसम में ज़मीन में उर्वरा शक्ति, सूखी सी टहनियों में हरियाली पैदा हो जाती है, नई–नई कोपलें निकलने लगती हैं, उसी तरह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अभ्युदय के बाद दिलों में नई हरारत पैदा हो गयी। करोड़ों इन्सान अपनी हक़ीक़ी मंजिल की तलाश और उस पर पहुंचने के लिए निकल खड़े हुए। हर मुल्क और क़ौम में यही भावना और यही नशा और हर तब्के में इस मैदान में एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की होड़ नज़र आती है। अरब व अजम (ग़ैर अरब), मिस्र व सीरिया, तुर्किस्तान व ईरान, ईराक व खुरासान, उत्तरी अफ्रीका और स्पेन और अन्ततः हमारा मुल्क हिन्दुस्तान और सुदूर पूर्वी द्वपी समूह सब इस मधुशाले के मतवाले और इसी मक़सद के दीवाने नज़र आते हैं। ऐसा लगता है जैसे इन्सानियत सदियों की नींद सोते–सोते जागी। आप इतिहास व तज़किरे की किताबें पढ़िये तो आपको नज़र आयेगा कि ख़ुदा प्राप्ति के अलावा कोई काम ही न था। शहर–शहर, कस्बा–कस्बा, गांव–गांव बड़ी तादाद में ऐसे खुदा मस्त, साहसी, जन सेवक, इन्सान दोस्त, त्यागी इन्सान नज़र आते हैं जिन पर फरिश्ते भी रश्क करें। उन्होंने दिलों की सर्द अंगेठियाँ गर्मा दीं। कला–कौशल के दरिया बहा दिये, इश्के इलाही (ईश प्रेम) का शोला भड़का दिया, मारफत व महब्बत की ज्योति जगा दी और मसावात (समरस्ता) का सबक़ पढ़ाया। दुखों के मारे समाज के सताये हुए इन्सानों को गले लगाया। ऐसा मालूम होता है कि बारिश के क़तरों की तरह ज़मीन के हर चप्पे पर यह चीज़ें ज़ाहिर हुईं और उनका शुमार नामुमकिन है।

जारी.....

❖❖❖

सहाबा का मक़ाम व मरतबा

—मौलाना सय्यिद बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

हदीस में सहाबा का जिक्रः–

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने सहाबा से जो महब्बत थी, इसका इज़्हार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख्तलिफ मवाके पर फरमाया, इरशाद हुआ, अनुवादः ''मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो, उनको मेरे बाद निशाना मत बनाना, पस जो उन से महब्बत करता है वह मेरी महब्बत की वजह से महब्बत करता है, और जो उनसे बुग्ज़ रखता है वह मुझ से बुग्ज़ रखने की वजह से उन से बुग्ज़ रखता है, जिसने उन को तक्लीफ पहुंचाई, उसने मुझे तक्लीफ दी, और जिसने मुझे तक्लीफ दी उसने अल्लाह को तक्लीफ दी और जिसने अल्लाह को तक्लीफ दी, अल्लाह उसकी जल्द ही गिरिफ्त करेगा''।

नीज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं, अनुवाद ''जो मेरे सहाबा को गाली दे (बुरा कहे) उस पर खुदा की लानत हो''।

दूसरी जगह इरशाद हुआ, अनुवादः ''जो मेरे सहाबा को गाली दे, उस पर खुदा की लानत, फरिश्तों की लानत और तमाम लोगों की लानत''।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कर्ने अव्वल (अपने ज़माने) को सब से अफ़्ज़ल क़रार दिया, यह सहाबा थे जिनको अल्लाह तआला ने अपने नबी की सुहबत के लिए चुना था, इरशाद है, अनुवादः सबसे अच्छे लोग वह हैं जो मेरे ज़माने में हुए (यानी सहाबा) फिर उनके बाद वाले, फिर उनके बाद वाले।''

तिर्मिज़ी शरीफ की एक रिवायत में आता है, अनुवादः ''जब तुम उन लोगों को देखो जो मेरे सहाबा को बुरा कहते हैं तो कहो कि तुम में जो बुरा है (यानी जो सहाबा को बुरा कहता है) उस पर खुदा की लानत''। खुली हुई बात है, बुरा वही है जो सहाबा को बुरा कहता है।

एक जगह इरशाद हुआ, अनुवादः ''सितारे आस्मान के लिए हिफाज़त का जरीआ़ हैं, जब सितारे न रहेंगे तो जिस चीज़ से डराया गया है वह सामने आजायेगी, और मैं अपने सहाबा की हिफाज़त का जरीआ हूँ, जब मैं न रहूंगा तो जिन चीज़ों से डराया गया है वह सब चीज़ें सामने आ जायेंगी और सहाबा उम्मत की हिफाज़त का जरीआ़ हैं जब वह न रहेंगे तो जिन खतरात से आगाह किया गया है वह सामने आजायेंगे''।

इमाम नववी रह0 फरमाते हैं कि ''जब आस्मान से तारे चले जायेंगे तो जिस

चीज़ से डराया गया है वह आजायेगी'' का मतलब यह है कि कियामत आ जायेगी ''और जब मैं न रहूंगा तो वह आजायेगा जिससे आगाह किया गया'' का मतलब यह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन चीज़ों से खुल कर खबर दार किया है, वह सामने आजायेंगी, जैसे मुख्तलिफ फित्ने, जंगें, आपस के इख्तिलाफात वगैरा और जब मेरे सहाबा न रहेंगे तो वह चीजें आयेंगी जिनकी हुजूर ने इत्तिला दी यानी दीन में बिदआत व खुराफात पैदा हो जायेंगी और आगे वह सब फित्ने जाहिर होंगे जिनको आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फरमाया है।

एक मरतबा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत में होने वाले फिर्कों का ज़िक्र फरमाया और इरशाद हुआ, अनुवादः ''मेरी उम्मत 73 फिर्कों में बंट जायेगी और एक के सिवा सब जहन्नम में जायेंगे'' सहाबा ने पूछा कि अल्लाह के रसूल! हक पर कौन होगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अनुवादः ''जिस तरीके पर मैं हूं और मेरे सहाबा, उसी तरीक़े पर चलने वाला''।

एक दूसरी हदीस में है, अनुवादः ''जब मेरे सहाबा का ज़िक्र आये तो ठहर जाओ, जब सितारों का ज़िक्र आये तो रुक जाओ, जब तक़्दीर का ज़िक्र आये तो ठहर जाओ''।

इस हदीस से साफ मालूम होता है कि किसी के लिए जाइज़ नहीं कि सहाबा का तज़्किरा बुराई के साथ करे, और जब भी उनके इख्तिलाफात सामने आयें तो चाहिये कि ज़बान बन्द रखी जाये।

इस हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा को मेअ़यारे हक़ (सत्य का मापदण्ड) करार दिया, और क़ियामत तक के लिए उनको नमूना बना दिया।

हदीस के इमामों ने इसी को उसूल करार दिया, इमाम इबनुस्सलाह तहरीर फरमाते हैं, अनुवादः ''तमाम सहा–एब–किराम की एक खुसूसीयत है और वह यह है कि उनमें से किसी की अदालत के सिलसिले में सुवाल भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह एक तै शुदा मसअला है, कुर्आन व सुन्न्त के नूसूस और जिन लोगों का इज्मअ मुअ़तबर है उनके इज्मअ से साबित है, अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम बेहतरीन उम्मत हो, जो लोगों के लिए पैदा की गई हो, बाज उलमा ने फरमाया कि मुफस्सिरीन हज़रात का इस पर इत्तिफाक़ है कि आयत अस्हाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में आई है''।

इमाम नववी फरमाते हैं कि अनुवादः सहाबा सब के सब आदिल हैं जो फित्ने में मुबतला हुए वह भी और दूसरे भी''।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की शहादतः–

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह0 जिन को ''खामिस खुलफाए राशदीन'' कहा जाता है, उन्होंने अपने एक मक्तूब में उम्मत को हज़राते सहाबा के बारे में जो तलक़ीन फरमाई, वह सोने के पानी से लिखे जाने के क़ाबिल है, वह फरमाते हैं, अनुवादः ''पस तुम्हें चाहिए कि अपने लिए वही तरीक़ा इख्तियार कर लो जिस को कौम (सहा–बए–किराम) ने अपने लिए पसन्द कर लिया था, इसलिए कि वह जिस हद पर ठहरे इल्म के साथ ठहरे और उन्होंने जिस चीज़ से लोगों को रोका, एक दूरबीं नज़र की बिना पर रोका, और बिला शुब्हा वही हज़रात दक़ीक़ हिक्मतों और इल्मी उलझनों के खोलने पर क़ादिर थे और जिस काम में थे उसमें सब से ज़ियादा फज़ीलत के वही मुस्तहिक़ थे, पस अगर हिदायत उस तरीक़ में मान ली जाये जिस पर तुम हो तो उसके यह माने हैं कि तुम फज़ाइल में उन से सबक़त ले गये जो बिल्कुल मुहाल है, अगर तुम यह कहो कि यह चीज़ें उन हज़रात के बाद पैदा हुई हैं इसलिए उन से यह तरीक़ा मन्कूल नहीं तो समझ लो कि इन को इजाद करने वाले वही लोग हैं जो उनके रास्ते पर नहीं हैं और उनसे अलाहिदा रहने वाले हैं, क्योंकि वही हज़रात साबक़ीन हैं जो मुआमलाते दीन में इतना कलाम कर गये हैं जो बिल्कुल काफी है और उसको इतना बयान कर दिया जो शिफा देने वाला है, पस उनके तरीक़े में कमी व कोताही करने का भी मौक़ा नहीं है, और उन पर ज़ियादती करने का भी किसी को हौसला नहीं है, और बहुत से लोगों ने उनके तरीक़े में कोताही की, वह मक़्सद से दूर रह गये और बहुत से लोगों ने उनके तरीक़े पर ज़ियादती का इरादा किया वह गुलू में मुबतला हो गये और वह हज़रात इफरात व तफरीत और कोताही के दरमियान एक राहे मुस्तक़ीम पर थे''।

सहाबी की तअ़रीफ़ः–

जम्हूर उम्मत के नज़दीक सहाबीयत की तारीफ यही है कि जिसने भी हालते ईमान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की (देखा) और ईमान के साथ दुन्या से रुख्सत हुआ वह सहाबी है, चाहे उसको एक वक़्त की नमाज़ पढ़ने की नौबत भी न आई हो, इसी तरह जो किसी वजह से आप को देख न सका लेकिन आप की मज्लिस में बैठा, वह भी इस तारीफ में शामिल है, इसाबा में है, अनुवादः ''सहाबी वह है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ईमान की हालत में मिला हो और इस्लाम पर ही उसकी वफात हो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात करने वालों में वह भी शामिल है जिसको

तवील सुहबत मिली हो और वह भी जिसने मुख्तसर सुहबत उठाई, वह भी शामिल है जिस ने रिवायत की और वह भी जिसने रिवायत नहीं की, और वह भी शामिल है जिसने आपको एक नज़र देख लिया, चाहे आप के साथ बैठने का शरफ न हासिल हुआ हो, और वह भी जो माज़ूर हो और किसी उज़्र की वजह से देख न सका हो जैसे नाबीना''। (लेकिन आप से मिला हो)।

सहाबा का ईमान व तक़्वाः–

जिस तरह नबी के अमल को किसी दूसरे (गैर नबी) के अमल से तौला नहीं जा सकता, उसी तरह एक सहाबी के अमल को किसी गैर सहाबी के अमल से तौला नहीं जा सकता, यहां मसअला आमाल की कसरत या कमी होने का नहीं बल्कि इसके वज़्न और कैफीयत का है जिस का तअल्लुक़ ईमान से है, अल्लाह तआला ने हर हर सहाबी को ईमान की जो गहराई अता की, यह सिर्फ शरफे सुहबते रसूल का खास्सा (विशेषता) है, किसी गैर सहाबी को यह मरतबा हासिल नहीं हो सकता, और इस ईमान के बाद बहुत ही मामूली अमल बड़े बड़े आमाल पर भारी हैं, इरशाद नबवी है, अनुवाद ''तुम मेरे सहाबा को बुरा मत कहो, पस उस ज़ात पाक की क़सम जिसके क़बज़े में मेरी जान है, अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी (राहे खुदा में) ख़र्च कर दे तो भी उनमें से किसी एक के मुद या आधे (मुद) को नहीं पहुंच सकता''।

क़ाबिले तवज्जो बात है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह भी गवारा न हुआ कि एक सहाबी की ज़बान से दूसरे ऐसे सहाबी के बारे में नामुनासिब बात निकले जो साबिक़ीन अव्वलीन में से हैं, तो अगर कोई गैर सहाबी किसी सहाबी की तन्क़ीस करता है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसको किस क़दर नापसन्द फरमाते, इस हदीस के ज़ैल में क़ाज़ी अयाज़ रह0 शारेह मुस्लिम तहरीर फरमाते हैं, अनुवादः ''इससे बात साफ हो जाती है कि शरफे सुहबत से उनको कई गुना अज्र मिल रहा है, इससे मालूम हुआ कि उनको इसी अज्र की ज़ियादती की वजह से दूसरों पर फज़ीलत हासिल है''।

फिर आगे फरमाते हैं, अनुवादः ''नबी की सुहबत व मुलाकात की फज़ीलत चाहे वह एक लम्हे के लिए हो, उसकी बराबरी किसी दूसरे (यानी गैर सहाबी) का अमल नहीं कर सकता, और यह फ़ज़ाइल कियासी नहीं है, यह महज़ अल्लाह का फज़्ल है जिसको चाहे अता फरमाये''।

जो तक़्वा अल्लाह तआला ने अंबिया अलैहिमुस्सलाम को दिया, वह किसी उम्मती को हासिल नहीं, बाज सहाबा ने जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामूलात

मालूम किये तो उनको ख़याल हुआ कि आप तो बख़्शे बख़्शाए हैं, हम को अमल में अपने आपको फना कर देना चाहिए, चुनांचे उनमें से एक साहिब ने कहा ''मैं हमेशा रात भर नमाज़ पढ़ूंगा, दूसरे साहिब ने कहा ''मैं तो हमेशा रोज़ा रहा करूंगा, और रोज़ा कभी न छोड़ूंगा, तीसरे साहिब ने कहा ''मैं औरतों से अलग रहूंगा, कभी शादी नहीं करूंगा, इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ लाये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''तुम्हीं लोग यह सब बातें कर रहे थे, सुनो मैं तुम में सबसे ज़ियादा अल्लाह तआला से डरने वाला हूं, तुम में सबसे ज़ियादा अल्लाह की रिज़ा का पास व लिहाज़ रखता हूं, लेकिन मैं कभी रोज़ा रखता हूं और कभी नहीं रखता, नमाज़ भी पढ़ता हूं, और सोता भी हूं, और औरतों से शादी भी करता हूं, जो हमारे तरीक़े से मुंह मोड़े वह हम में से नहीं।''

इसी तरह अल्लाह तआला ने सहाबा के साथ कल–मए–तक़्वा को लाज़िम फरमा दिया, आमाल चाहे कम नज़र आयें लेकिन उनके ईमान और तक़्वा की शान बहुत बुलन्द है, अनुवादः ''और उनको परहेज़गारी की बात पर रखा और वह उसी के मुस्तहिक़ और उसके अहल थे''।

(अल–फ़त्हः26)

सहाबा कौन थेः–

यह कोई इस्तेअ़जाब (हैरानी) की बात नहीं, यह वह जमाअत थी जिस को अल्लाह तआला ने अपने नबी के लिए चुना था और यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शागिर्द थे जिन को सारी उम्मत का मुअल्लिम (गुरू) बनाना था, उम्मत को जो भी दीन व कुर्आन हासिल हुआ वह उसी कुदसी जमाअत के वास्ते से हासिल हुआ, मुसनद अहमद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 की रिवायत है, अनुवादः ''अल्लाह तआला ने तमाम बन्दों के दिलों पर नज़र डाली तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल को तमाम दिलों में से बेहतर पाया, और उनको अपने लिए चुन लिया और अपनी रिसालत के लिए मुकर्रर कर दिया, फिर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ल्ब के बाद दूसरे कुलूब (दिलों) पर नज़र फरमाई, तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अस्हाब के दिलों को (अंबिया अलै0) के दिलों के बाद दूसरे बन्दों के मुक़ाबिल सबसे बेहतर पाया, तो उन्हें नबी का मुआ़विन बनाया, जो उनके दीन के लिए जिहाद करते हैं, तो मुसलमान (सहाबा) जिस चीज़ को अच्छा समझें, अल्लाह के नज़दीक वही चीज़ अच्छी है और जिस चीज़ को वह बुरा समझें वह चीज़ अल्लाह के नज़दीक बुरी है''।

इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 से जो रिवायत सहाबा के सिलसिले में नक़्ल फरमाते हैं, उससे बेहतर तारीफ उम्मत में शायद ही किसी ने सहाबा की की हो, आगे वह फरमाते हैं, अनुवादः ''जो शख्स पैरवी करना चाहता है, उसे चाहिए कि अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करे, क्योंकि यह हज़रात सारी उम्मत में सबसे ज़ियादा पाक दिल रखने वाले, सब से गहरा इल्मे दीन रखने वाले, सबसे ज़ियादा सीधा रास्ता रखने वाले, सबसे ज़ियादा बेहतर हालात रखने वाले थे, यह वह क़ौम हैं जिसको अल्लाह ने अपने नबी की सुहबत और इकामते दीन के लिए चुना, तो तुम उनके फज़्ल (बड़ाई) के मुअ़तरिफ (मानने वाले) रहो और उन की पैरवी करो, क्योकि यही लोग राहे मुस्तक़ीम पर हैं''।

हक़ीकत में जमाअते सहाबा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फैजे सुहबत व तरबीयत की शाहकार थी, इमाम इब्ने तैमिया लिखते हैं, अनुवादः ''इसी सरज़मीने अरब में जहां बुत परस्ती, काहिनों की झूटी सच्ची खबरों, खालिक़ से कुफ्र और मख्लूक़ की इताअत, नाहक़ खूंरेज़ी (रक्त पात) और क़तअ रहमी का दौर दौरा था, आखिरत व मआ़द का कोई तसव्वुर न था, दावते दीन बुलन्द हुई, फिर यही लोग इस गीती के सब से बड़े आलिम, सबसे ज़ियादा दीनदार, सबसे ज़ियादा इन्साफ़ शिआ़र और सबसे ज़ियादा साहिबे फज़्ल व कमाल बन गये, यहां तक कि जब यह लोग शाम आये और वहां के नसारा ने उन्हें देखा तो वह बे इख्तियार चीख पड़े ''मसीह के रुफक़ा इनसे अच्छे न थे'' दुन्या में इन हज़रात के इल्म व अमल के असरात और गैरों के नुकूश भी मौजूद हैं, एक अक़्ल वाला समझ सकता है कि दोनों में किस क़दर फर्क़ है''।

हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 ने सहीह फरमाया है कि ''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पैगाम और अपनी दावत के ज़रिये से जिन अफराद को तैयार कर के कारगहे हयात में उतारा था, वह अल्लाह पर सच्चा ईमान रखने वाले, नेक खूई पसन्द करने वाले, अल्लाह के खौफ़ से डरने वाले और लरज़ने वाले, अमानत का पास करने वाले, दुन्या पर आख़िरत को तरजीह देने वाले, माद्दे को हक़ीर समझने वाले और अपनी रूहानीयत से माद्दीयद पर ग़ालिब आने वाले थे, वह इस बात पर दिल से यक़ीन रखते थे कि दुन्या तो हमारे लिए बनाई गई है, लेकिन हम आखिरत के लिए पैदा किये गये हैं, पस यह

अफराद अगर तिजारत के मैदान में उतरते हैं तो निहायत सच्चे और ईमान दार साबित होते हैं, अगर मज़दूरी का पेशा इख्तियार करते हैं तो निहायत मेहनती और बिहीख्वाह मज़दूर साबित होते हैं, अगर मालदार हो जाते हैं तो एक रहम दिल और फय्याज़ दौलत मन्द साबित होते हैं, अगर ग़रीब होते हैं तो शराफत को काइम रखते हुए मुसीबतों को झेलते हैं, अगर अदालत की कुर्सी पर बैठा दिये जाते हैं तो निहायत समझदार और मुन्सिफ जज साबित होते हैं, अगर हुकूमत के अमीर होते हैं तो एक मुख्लिस और बे गरज़ हुक्मरां साबित होते हैं, अगर आक़ा होते हैं तो रहम दिल और आजजी करने वाले होते हैं अगर नौकर होते हैं तो निहायत चुस्त और फरमां बरदार नौकर होते हैं और अगर क़ौम का माल व दौलत उन की तहवील में आ जाते हैं तो हैरत अंगेज़ बेदारी और बाखबरी से उसकी निगरानी करते हैं''।

मुफक्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी रह0 दूसरी जगह लिखते हैं, ''नुबूवत के उन कारनामों में जो ज़िन्दगी की पेशानी पर दरखशां और ताबां है, सब से रौशन कारनामा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कारनामा है, जिसकी सबसे ज़ियादा तफ्सीलात तारीख में महफूज़ है, मरदुम साज़ी और आदमगरी (आदमियों को आदमी बनाना) के इस काम में अल्लाह तआला ने आप को जो काम्याबी अता फरमाई वह आज तक किसी इन्सान को हासिल नहीं हुई आपने जिस सत्ह से तामीरे इन्सानियत का काम शुरुअ़ किया उस सतह से किसी पैगम्बर, किसी मुस्लेह़ और किसी मुरब्बी को शुरुअ़ करने की ज़रूरत कभी पेश नहीं आई थी, यह वह सतह थी जहां हैवानियत की सरहद खत्म होती थी, और इन्सानियत की सरहद शुरुअ़ होती थी, और जिस सतह पर आपने इस काम को पहुंचाया, उस सतह तक भी कभी तामीरे इन्सानियत का काम नहीं पहुंचा, जिस तरह आपने इन्सानीयत की इन्तिहाई पस्ती से काम शुरुअ़ किया, उसी तरह इन्सानीयत की आख़िरी बुलन्दी तक इस काम को पहुंचाया''।

आपके तैयार किये हुए अफराद में से एक एक फर्द नबुबूवत का शाहकार है, और नौअ़े इन्सानी के लिए बाइसे शरफ व इफ्तिखार है, इन्सानीयत के मुरक़्क़ा में बल्कि इस पूरी काइनात में पैगम्बरों को छोड़ कर इस से ज़ियादा हसीन व जमील, इस से ज़ियादा दिल कश वह दिल आवेज़ तस्वीर नहीं मिलती, जो उनकी ज़िन्दगी में नज़र आती है, उनका पुख़्ता यक़ीन, उनका गहरा इल्म,

शेष पृष्ठ .....33...पर

खिलाफते राशिदा और खुलफाए अरबअ: रज़ियल्लाहु अन्हुम

—हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी रह0 —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

मेरे नज़दीक इस्लाम की ज़िन्दगी में पेश आने वाले तमाम अदवार व मराहिल की नुमाइन्दगी (हर प्रकार की परिस्थितियों में प्रतिनिधित्व) खिलाफते राशिदा के इस मुख़्तसर से दौर में (जो 30 साल से ज़ियादा नहीं) कर दी गई है, और हर आने वाले नागुज़ीर हालात (पथ प्रदर्शन) का सामान है, आगाज़ेकार और इक़्बाल व तरक़्क़ी के ज़माने में किस इस्तिक़ामत और ईमान व यक़ीन का मुज़ाहिरा करना चाहिए, उसकी रहनुमाई हम को अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 की हयाते तय्यिबा (पवित्र जीवनी) और खिलाफते राशिदा से हासिल होती है, उरूज व शबाब और अम्न व निज़ाम के ज़माने में किस इस्तिक़ामत और ईमान व यक़ीन का मुज़ाहिरा करना चाहिए उसकी रहनुमाई हम को फ़ारूक़े आज़म रज़ि0 के दौरे खिलाफ़त से मिलती है, मुखालिफतों, शोरिशों और फित्नों और बे नज़्मी और इन्तिशार के वक़्त (उपद्रव तथा विद्रोह के समय) किस सबात व इस्तिक़ामत किस पामर्दी और दिलेरी और किस ईमान व यक़ीन की ज़रूरत है, उसका नमूना हम को हज़रत उस्मान रज़ि0 और हज़रत अली रज़ि0 की ज़िन्दगी और उनके दौरे खिलाफत में मिलता है, अगर इस्लामी तारीख के ज़खीरा में सिर्फ खिलाफते राशिदा के दो बाब (दर अस्ल एक बाब की दो फस्लें हैं) और सिर्फ खिलाफते सिद्दीक़ी और खिलाफते फ़ारूक़ी का नमूना होता तो यह रहनुमाई ना तमाम होती और दौरे इन्तिशार (अव्यवस्था तथा उपद्रव काल) और दौरे फितन के लिये मुसलमानों के पास तक़्लीद व इत्तिबा के लिए कोई इमाम और पेशवा न होता, जिस उम्मत के लिए क़ियामत तक बाक़ी रहने और तमाम इन्सानी अदवार और तारीख के नशेब व फराज़ से गुज़रना मुकद्दर था, उसके लिए दोनों तरह के नमूनों की ज़रूरत थी, और खिलाफते राशिदा ने अपने पूरे अजज़ा के साथ उन नमूनों को फराहम और उस रहनुमाई को मुकम्मल कर दिया। अल्लाह तआला हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली से राज़ी हुआ और अल्लाह तआला ने उनको इज़्ज़त बख्शी तमाम उम्मत की तरफ़ से उनको अच्छा बदला दिये जाने की दुआ है।

❖❖❖

आप के प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक बीवी अपने शौहर से तलाक़ चाहती थी मगर शौहर तलाक़ नहीं दे रहा था, बीवी ने धोके और बहाने से शौहर को शराब पिला दी जब वह पूरे नशे में हो गया तो तलाक़ लिखा ली यह तलाक़ हुई या नहीं?

उत्तरः नशे की हालत में जो तलाक़ दी जाती है, अगर चे बाज़ सूरतों में तलाक़ वाके हो जाती है, लेकिन धोके से या जबरन शराब पिला कर बहालते नशा जो तलाक़ दिलावाई गई है वह मोतबर नहीं है। इसलिए तलाक़ नहीं हुई। (दुर्रेमुख्तार:2/583)

प्रश्नः एक शख्स ने नींद की दवा डॉक्टर के मशवरे से खाई, दवा इतनी तेज़ थी कि थोड़ी देर के बाद वह पागलों की तरह बकने लगा उसी हालत में उसने अपनी बीवी को मुखातब करके तलाक़ दे दी उसका इलाज हुआ जब वह ठीक हो गया तो उसको बताया गया कि तुम ने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी है, उसने कहा मुझे कुछ याद नहीं ऐसी सूरत में तलाक़ हुई या नहीं?

उत्तरः माहिर डॉक्टर के मशवरे से जब दवा ली है तो उसमें उनकी कोताही को दख्ल नहीं है इसलिए दिमागी तवाजुन बरकरार न रहने की वजह से जो तलाक़ दी है वह मोतबर नहीं है, लिहाजा तलाक़ नहीं हुई, फुक़हा ने लिखा है कि अगर किसी ने ऐसी नशाआवर चीज़ इस्तेमाल की जिसके नशा आवर होने का उसे इल्म न हो या दिमागी हालत खराब होने की खबर न हो और वह अपनी बीवी को उसी हालत में तलाक़ दे दे तो तलाक़ वाके नहीं होगी।

(निसाबुल—एहतिसाब, बाब 36 स0 74—75)

प्रश्नः मियाँ बीवी के दरमियान जब तफरीक़ (अलाहिदगी) हो जाये तो उसके बाद शौहर पर क्या हुकूक़ होते हैं?

उत्तरः जब मियाँ बीवी के दरमियान तफरीक़ हो जाये तो शौहर पर यह हुकूक़ आइद होते हैं:—

(1) अगर महर अदा न किया हो तो महर अदा करे।

(2) इद्दत का नफ़्क़ा (खर्चा) दे।

(3) सामाने जहेज़ जो मौजूद हो उसको वापस करे।

(4) अगर बच्चे हों और वह माँ की परवरिश में हों तो उनके इखराजात अदा करे।

(5) अगर औरत के पास ज़ाती मकान न हो जिसमें वह बच्चों के साथ रहे तो बच्चों के बाप की जिम्मेदारी है कि वह ऐसे मकान का इन्तिज़ाम करे जिसमें माँ उन बच्चों के साथ रिहाइश इख्तियार कर सके।

(हिदायाः 2/435—444)

प्रश्नः अगर शौहर से जबरदस्ती तलाक़ नामे पर दस्तख़त कराया जाये तो क्या उससे तलाक़ होगी या नहीं?

उत्तरः अगर ज़बरदस्ती तलाक़ नामे पर दस्तखत कराया जाये और ज़बान से तलाक़ न कहलवाया जाये तो तलाक़ न होगी।

(रद्दुल मुहतारः4/440)

प्रश्नः अगर किसी शख्स पर कभी कभी जुनून का दौरा पड़ता हो और उसी हालत में अपनी बीवी को तलाक़ दे दे तो तलाक़ होगी या नहीं?

उत्तरः जुनून की हालत में दी हुई तलाक़ वाके नहीं होती है क्योंकि तलाक़ वाक़े होने के लिए अक़्ल व हवास का मौजूद होना ज़रूरी है। और जुनून की हालत में अक़्ल बाक़ी नहीं रहती।

(हिदायाः 2/420)

प्रश्नः कुर्आन मजीद की तिलावत के दर्मियान दुन्यावी बातें करना कैसा है?

उत्तरः अगर कोई ऐसी फौरी ज़रूरत पेश आई हो कि बात किये बगैर चा–रए–कार न हो तो मुख्तसर बात कर सकता है, मगर जब फिर तिलावत शुरुअ करे तो अऊज़ुबिल्लाहे मिनश्शैतानिर्रजीम ज़रूर पढ़े।

प्रश्नः रेडियो वगैरा सुन्ने का क्या हुक्म है? जब कि उस में जो कुछ सुनाया जाता है, उस में कोई हराम बात न हो?

उत्तरः रेडियो में कुर्आन की, मुफीद बातों से या अहम खबरों से मुतअल्लिक़ जो कुछ नश्र किया जाता है उसे सुन्ने में कोई हरज नहीं, इसी तरह कुर्आन करीम के मुतवातिर प्रोग्राम या मुफीद बातों और नसीहतों और ऐसे ही दूसरे मुफीद प्रोग्राम सुनने में भी कोई हरज नहीं और खबरों का सुनना मुबाह है, गाने वगैरा सुनना जाइज़ नहीं।

प्रश्नः एक शख्स आए दिन ट्रेन या बस से सफर करता है, अक्सर दौराने सफर दुश्वारियों का सामना होता है कभी किब्ला दुरुस्त नहीं, रुकूअ व सुजूद के लिए मुनासिब जगह नहीं, ऐसे हालात में क्या यह मुम्किन है कि मज़्कूरा शख्स मन्ज़िले मक्सूद पर पहुंच कर फर्ज़ से सुबुकदोश हो, चाहे क़ज़ा ही करना पड़े?

उत्तरः नमाज़ें दौराने सफर शरअ के मुताबिक मतलूब हैं जिस हद तक कुदरत हो शराइते नमाज़ और फराइज़े नमाज़ पूरे करें, शरई मजबूरी के बगैर नमाज़ें छोड़ने और घर जा कर नमाज़ों की क़ज़ा करने पर इनदल्लाह माखूज़ होगा। (पकड़ा जायेगा)

प्रश्नः ज़ैद की हालत बहुत ज़ियादा खराब होने की वजह से नमाज़ क़ज़ा होती रहती थी अब इन्तिक़ाल हो गया है, ज़ैद की कोई वसीयत क़ज़ा नमाज़ों के सिलसिले में नहीं है ऐसी सूरत में जो नमाज़ें क़ज़ा हो गईं हैं क्या वारिसीन इस का फिदया दे सकते हैं?

उत्तरः मय्यित की तरफ से नमाज़ों का फिदया देना वाजिब नहीं है और न उसकी तरफ़ से क़ज़ा पढ़ी जाएगी अगर वारिसीन अपनी तरफ़ से फिदया दे दें तो उम्मीद है कि कफ़्फ़ारा अदा हो जायेगा।

प्रश्नः मैं मध्य प्रदेश में रहता हूं मेरा आबाई वतन इस मक़ाम से तक़रीबन 800 किलो मीटर दूर है हर बारह दिन के बाद एक बार अपने वतन वापस चला जाता हूं और वतन में तीन चार दिन रह कर वापस आ जाता हूं, साल भर ऐसा ही मेरा मामूल रहता है, ऐसी सूरत में मुझे नमाज़ किस तरह अदा करनी चाहिए, मैं कहां मुसाफिर हूं और कहां मुक़ीम हूं?

उत्तरः आप अपने आबाई वतन में नमाज़ पूरी पढ़ें चाहे वहां आप सिर्फ एक दिन ही के लिए रुकें और चूंकि मज़्कूरा मकाम पर आप पन्द्रह दिन से कम ही ठहरते हैं लिहाज़ा वहां आप मुसाफिर ही रहेंगे और कस्र करेंगे।

प्रश्नः क्या जुह्र की नमाज़ पढ़ाने के लिए इमाम के लिए सुन्नतें पढ़ना ज़रूरी हैं?

उत्तरः इमाम को चाहिए कि जुह्र की चार सुन्नतें पढ़ कर फर्ज़ नमाज़ पढ़ाए, फर्ज नमाज़ पढ़ाने के लिए सुन्नतों का पढ़ना वाजिब नहीं है, मगर मसनून ज़रूर है।

प्रश्नः मुर्दों की तरह ज़िन्दों के लिए भी ईसाले सवाब किया जा सकता है या नहीं?

उत्तरः ज़िन्दों के लिए भी ईसाले सवाब किया जा सकता है।

प्रश्नः जब नमाज़े जनाज़ा में इमाम तक्बीर कहता है तो बाज लोग आस्मान की तरफ़ सर उठाते हैं, ऐसा करना जाइज़ या नहीं?

उत्तरः नमाज़े जनाज़ा में नमाज़ पढ़ते और पढ़ाते वक़्त आस्मान की तरफ़ सर नहीं उठाना चाहिए, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इससे रोका है, और फरमाया है कि ऐसा न करो क्योंकि डर है कि तुम्हारी निगाहें उचक ली जाएं।

प्रश्नः एक शख्स हलाल व हराम दोनों के कारोबार करता है और उसका अलग अलग हिसाब नहीं रखता है, लिहाज़ा अगर वह दावत दे तो लागों को उसमें शिरकत करनी चाहिए या नहीं?

उत्तरः मज़्कूरा सूरत में अगर मज़्कूरा शख्स की अक्सर आमदनी जाइज़ व हलाल है तो उसके यहां शरीक हो कर खाना खा सकते हैं, मगर एहतियात करना बेहतर है।

प्रश्नः वकालत के ज़रीये हासिल शुदा रक़म का शरअ़न क्या हुक्म है?

उत्तरः वकालत के ज़रीये हासिल शुदा रक़म की सूरत अगर यह है कि वकील ने झूठ और धोखा बाज़ी से काम न लिया हो बल्कि अपनी कोशिश भर उसने सहीह मुकद्दमा लिया और दियानतदारी से वकालत की तो उससे हासिल शुदा रक़म हलाल है, अगर उसने वकालत में झूठ और धोखा बाज़ी का सहारा लिया हो तो उससे हासिल शुदा रक़म यकीनन हराम है। ◆◇◆

इब्रत व बसीरत और नमून-ए-अ़मल

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी —हिन्दी लिपिः अब्दुल्लाह मतलूब नदवी

सन् हिजरी का आग़ाज़ हिजरत के उस अज़ीमुश्शान तारीखी वाक़िये की याद ताज़ा करता है, जो तेरह साल की मुसलसल जिद्दोजुहद के बाद मुसलसल अजीयतों, मशक्कतों और हिम्मत शिकन हालात का मुकाबला करने के बाद पेश आया, और नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रफीक़ सिद्दीक़े अकबर रज़ि0 को साथ ले कर मक्के से मदीने जाने के लिए तैयार हुए, अहले मक्का की अदावत आखिरी हद तक पहुंच चुकी थी और वह किसी तरह हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वजूद को बर्दाश्त करने के लिए तैयार ना थे, इसलिए आप उनके शर से बचने के लिए पहले ग़ारे सौर में चन्द दिन क़याम फरमाया, और उसी असना में ज़ादे सफर, सवारी और रहबर का इन्तिज़ाम भी फरमा लिया, और एक दिन सुबह को क़ाफिला मदीने की तरफ चल पड़ा, और तारीखे इस्लाम के उस ठहरे हुए समन्दर में तुग़यानी शुरु हो गई, हिजरत से पहले के ये तेरह साल उस बुन्यादी पत्थर की हैसियत रखते हैं, जिस के मुस्तहकम होने के लिए हज़ारों, तूफानों, सैलाबों और तरह तरह के गरदिशों की ज़रूरत पड़ती है, बुन्याद का पत्थर मज़बूत करने के लिए वक़्त और मेहनत, कुर्बानी और तहम्मुल सब कुछ दरकार होता है, इसलिए बुन्याद पर वक़्त और मेहनत सर्फ किए बग़ैर और उस पर मसाइब का बोझ डाले बग़ैर जो इमारत तामीर कर दी जाती है, वह उमूमन तूफान और झटकों को बर्दाश्त करने की सलाहियत नहीं रखती और किसी अदना झटके से गिर कर मुनहदिम हो जाती है, या कम अज़ कम ना क़ाबिले रिहाइश क़रार दे दी जाती है। हिजरत से पहले की मुद्दत दर असल इस्लामी तारीख़ का वह बुन्यादी पत्थर है, जिसने हज़ारों तूफानों और जलज़लों और तरह तरह के झटकों को बर्दाश्त कर के अपना इस्तेहकाम साबित कर लिया था, और उस पर एक शानदार तारीख की बुलन्द व बाला इमारत बे खौफ व खतर क़ाएम हो सकती थी। माक़बले हिजरत की सख्तियों और उन सब्र आज़मा मसाइब के अन्दर, जिन को पैगम्बरे इस्लाम और उनके जांनिसार साथियों ने निहायत ख़नदह पेशानी के साथ झेला था, एक ऐसी लाज़वाल ज़िन्दगी और ऐसी शानदार फतह व नुसरत मुज़मर थी जिस को दुन्या ने इस्लामी शरीअ़त के नाम से पहचाना, और जिसने देखते देखते

मशरिक़ व मग़रिब, शुमाल व जुनूब में अपना झण्डा गाड़ दिया, और बेचैन व मुज़तरिब दुन्या गुम करदह राह क़ौमों को सुकून व हिदायत की दौलते दवाम अ़ता की, इनसानियत के तने मुर्दह में रूह फूंकी और इन्सानों को एक ऐसा क़ानूने फितरत अता किया जो उनके तमाम मसाइल का हल था, और जिसमें उनकी सअ़ादत व कामरानी का राज़ मुज़मर था।

हिजरत का वाकिअ़ा उस अज़ीम तरीन कामियाबी का एलान था, जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने अज़ीम तरीन मक़सद में बेशुमार व परेशानियों को झेलने के बाद हासिल हुई थी, ये वाकिअ़ा एलान था इस बात का कि इस्लाम गालिब है और मुसलमान मुज़फ़्फर व मनसूर हैं, ये हक़ व बातिल की जंग में बातिल की शिकस्त और हक़ की कामयाबी का एलान था, ये कुफ्र व शिर्क की पसपाई और तौहीद व रिसालत के गलबे का एलान था, ये आवाज़ए हक़ की सदाक़त और शौतानी तदाबीर की नाकामी का एलान था, ये इनसानों की सअ़ादत व फलाह़ और ज़ादए इनसानियत से दूर भागने वालों की शकावत व बदबखती का एलान था, हिजरत का वाकिअ़ा राहे खुदा में सब कुछ कुर्बान कर देने और खुदा का एलान था कि इनसान को खुदा की राह में सब कुछ नज़र अन्दाज़ कर देने के बाद सब कुछ मिल सकता है। जो उसने छोड़ा या नज़र अन्दाज़ किया है। हिजरत का वाकिअ़ा एक मुसलमान के लिए बड़ी इबरत व बसीरत का हामिल है, ये काम्याबी का एक नया मोड़ है, ये पूरी इनसानियत के लिए क़यामत तक के लिए अम्न व मुहब्बत, कुर्बानी व इताअ़त का वह मेअ़यार है, जिस के बग़ैर जिन्दगी में कामयाबी की उम्मीद करना अ़बस और सअ़ादत व सुकून की तवक्को रखना बेकार है, हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्के से मदीन की तरफ हिजरत फरमाई थी, लेकिन मुसलमानों की हिजरत ये है कि वह गुनाह व मअ़सियत की ज़िन्दगी से ताअ़त व बन्दगी की तरफ़ हिजरत करें, वह नफ़्स और शैतान की पैरवी छोड़ कर अल्लाह और रसूल की पैरवी करें, वह बुराईयों और अख्लाकियों की दुन्या से हिजरत करके नेकियों और बुलन्द अख्लाक़ी की दुन्या की तरफ़ आएं, उनकी हिजरत ये नहीं है कि वह अपना आबाई वतन तर्क कर के किसी दूसरे शहर को अपना बना लें, और अपने अइज्ज़ा व अक़ारिब को खैर बाद कह के दूसरे लोगों के साथ रिश्त–ए–उखूवत में मुनसलिक हो जाएं, बल्कि उनकी हिजरत ये है कि वह खुदा के दीन को मुस्तहकम बनाने, उसकी शरीअ़त को नाफिज़ करने और उसके क़ानून को राइज करने के

लिए हर तरह की कुर्बानी दें, वह मुन्कर को खत्म करने, गुनाहों को नेस्त व नाबूद करने और जुल्म व ना इन्साफी का क़ला क़मअ़ करने के लिए हर तरह की जिद्दोजुहद करें, और नेकी को आम करें खुदा की बन्दगी को बरूए कार लाने और अद्ल व इन्साफ को मुस्तहकम करने के लिए अपनी तमाम तवानाइयों और जुम्ला सलाहियतों को सर्फ करें हिजरत का यही वह बुन्यादी मज़मून है, जिसके लिए ये तारीख वजूद में आई और इस्लाम को फरोग़ हासिल हुआ, यही तमाम इन्सानी काम्याबियों का पेश खीमा है, और इससे तमाम नाक़ाबिले तसख़ीर ताक़तों पर क़ाबू पाया जा सकता है, जो बज़ाहिर ना मुम्किन मालूम होता है, उस मफहूम को हम जितना ही ज़ियादा अपनी ज़िन्दगियों में अ़ाम करेंगे और इजतिमाई, तमद्दुनी सियासी और इक़तिसादी मुआ़मिलात में उस को रहनुमा बनाएंगे, हमारी पेचीदगियां दूर होंगी, हमारी परेशानियों और बे इत्मिनानियों का खातिमा होगा और हमारे तमाम उलझे हुए मसाइल हल होंगे। अ़ाम तौर से हमने हिज़रत को तारीखे इस्लाम और दीगर वाकिआ़त की तरह महज एक इत्तिफाक़ी वाक़िआ़ा समझ रखा है हालांकि हिज़रत का वाक़िआ़ा दर असल इस्लाम की काम्याबी और उसकी सर बुलन्दी का राज़ है यह वह कलीद है जिससे हक़ व इनसाफ़ का कुफ्ल खोला गया, और इनसानों के लिए एक नई जिन्दगी की राह मुतअ़य्यन हुई और ये एलान हुआ कि आज खुदा का दीन ग़ालिब आ गया और रास्ते की सारी दुशवारियां दूर हो गईं, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के झण्डे के नीचे अबू जहल व अबू लहब का परचमे कुफ्र व ज़लालत सरनिगूं हो गया, तौहीद व ईमान के सामने कुफ्र व शिर्क की सारी ताक़तें फना हो गईं, और आज से इस्लाम और सिर्फ इस्लाम इनसानों का दीन क़रार पाया। आज और तरीख़ के हर दौर में मुसलमानों की ये बड़ी सआदत होगी कि वह हिजरत के वाक़िये के साथ उस की तमाम खुसूसियात को मुस्तहज़र रखें, जो उसके साथ वाबस्ता हैं, और हिज़रत के उस बुन्यादी मफहूम को हर वक़्त मुसतहज़र रखें ताकि पेश आने वाले हालात का मुक़ाबला करने और मुश्किल से मुश्किल तर अवक़ात में अपने ऊपर क़ाबू रखने की कुव्वत उनमें मौजूद रहे, इसलिए कि एक मुसलमान की ज़िन्दगी हमा दम ना मुवाफिक़ हालात की ज़द में होती है, अगर इसमें वे खुसूसियत ना हो और उस की नज़रों में वह औसाफ ना हों जो हिज़रत के औसाफ समझे जाते हैं तो वह बहुत जल्द हालात की नामुसाअदत से मरऊब हो कर शिकस्त खा जाता है, और ज़िन्दगी को

शेष पृष्ठ ...40...पर

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का आचार-व्यवहार

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

कोमल हृदयताः-

एक बार एक सहचर अज्ञानता काल का अपना एक क़िस्सा सुना रहे थे कि मेरी एक छोटी बेटी थी। अरब में लड़कियों को मार डालने की कहीं—कहीं प्रथा थी। मैंने भी अपनी बेटी को ज़िन्दा क़ब्र में गाड़ दिया। वह अब्बा—अब्बा कह रही थी और मैं उस पर मिट्टी डाले जा रहा था। निर्दयता की इस घटना को सुन कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आँखें भर गईं।

(सीरतुन्नबी)

बच्चों पर वात्सल्यः-

अल्लामा शिब्ली रह0 अपनी पुस्तक सीरतुन्नबी में लिखते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चों से बड़ा प्यार करते थे। सफर से वापस लौटते तो रास्ते में बच्चे मिलते उनमें से किसी को अपने साथ सवारी पर आगे या पीछे बैठा लेते। रास्ते में बच्चे मिल जाते तो उनको खुद सलाम करते।

(2) आपका वात्सल्य और प्रेम जिस प्रकार मुसलमानों के बच्चों पर था उसी प्रकार ग़ैर मुस्लिमों पर भी था। एक बार कुछ बच्चे युद्ध में अनैच्छिक रूप से मारे गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सूचना मिली तो बहुत दुखी हुए। एक सहाबी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! वह बहुदेववादियों के बच्चे थे, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, बहुदेववादियों के बच्चे भी तुमसे बेहतर हैं, ख़बरदार! बच्चों की हत्या न करो, बच्चों को क़त्ल न करो। हर जान ख़ुदा ही की प्रकृति पर पैदा होती है।

(सीरतुन्नबी)

(3) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने से एक जनाज़ा गुज़रा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हो गए। किसी ने कहा, हुजूर सल्ल0! ये यहूदी का जनाज़ा है। आप सल्ल0 ने कहा, क्या ये इन्सान नहीं है?

दासों पर वात्सल्यः-

माले ग़नीमत (युद्ध में हाथ आने वाली वस्तुएं) जब बांटा जाता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसमें से दासों को भी ज़रूर हिस्सा देते थे। जो गुलाम नये आज़ाद होते और चूंकि उनके पास कोई सम्पत्ति न होती थी तो जो आमदनी आती उसमें सबसे पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुलामों को ही देते थे।

एक बार एक व्यक्ति आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और

पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं गुलामों का कुसूर कितनी बार माफ़ करूँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप रहे। उसने फिर पूछा, आप सल्ल0 फिर ख़ामोश रहे। जब उसने तीसरी बार प्रश्न किया तो कहा, ''हर दिन सत्तर बार माफ करो''।

(सीरतुन्नबी)

महिलाओं के साथ सद्व्यवहारः-

हर दौर में और हर जगह महिलाएं अपमानित रही हैं। संसार के किसी धर्म ने महिलाओं को वह स्थान नहीं दिया जो इस्लाम ने उन्हें दिया बल्कि उनके साथ वही मामला किया जाता रहा है जो आम चीज़ों के साथ इन्सान करता है, यहां तक कि एक ज़माने में महिलाएं पैतृक सम्पत्ति की वस्तुओं की तरह विरासत में बाँट दी जाती थीं, लेकिन इस्लाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सम्मान और प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में पुरुषों के समान स्थान दिया।

इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अभ्युदय से पूर्व अरब में झूठी प्रतिष्ठा के आधार पर लड़कियों को जब वह खाने–पीने और चलने फिरने लगती थीं तो पिता सजा–संवार कर जंगल में ले जाता और गड्ढा खोद कर उसको ज़िन्दा गाड़ देता था। कभी पहाड़ की चोटी पर ले जा कर नीचे फेंक दिया जाता, कभी पानी में डुबो दिया जाता था। लड़कियों के साथ होने वाले इस अन्याय को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने महसूस किया और इस पर रोक लगायी। आप सल्ल0 की शिक्षाओं में बेटियों के पैदा होने को बरकत कहा गया और बेटियों के लालन–पालन पर जन्नत का वादा किया गया है तथा उनकी शिक्षा–दीक्षा पर जन्नत में विशेष उपहार–पुरस्कार का भी वादा है। हदीस की प्रसिद्ध पुस्तक तिर्मिज़ी में है कि एक महिला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी हज़रत आइशा रज़ि0 के पास आयीं, जिसके साथ दो लड़कियाँ थीं। महिला ने उनसे कुछ माँगा, उस समय उनके पास एक खजूर के अतिरिक्त कुछ न था। वह खजूर उन्होंने उस औरत को दे दी। उसने खजूर के दो टुकड़े किये और एक–एक टुकड़ा दोनों बच्चियों को दे दिया तथा स्वयं कुछ न खाया और चली गयी। थोड़ी देर बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

घर आये तो हज़रत आइशा रज़ि0 ने उस महिला का क़िस्सा सुनाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, जिसको दो बच्चियों के लालन–पालन का अवसर मिले और वह उनके साथ ममता का व्यवहार करे तो वह बच्चियाँ उसको जहन्नम से बचाने के लिए आड़ बन जायेंगी।

पशु–पक्षियों पर दयाः–

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैवानों पर भी रहम खाते थे। इन बेज़ुबानों पर जो अत्याचार लम्बे समय से हो रहा था, उस पर आप सल्ल0 ने रोक लगाई। ऊँट की गर्दन में कलादा (गले का पट्टा) लटकाने की प्रथा थी, उसको भी मना कर दिया। जीवित जानवरों के शरीर से मांस काट कर निकाल देने को भी मना किया। जानवरों की पूँछ काटने से भी रोका। जानवरों को देर तक साज़ में बांध कर खड़ा रखने से भी रोका और आदेश दिया कि जानवरों की पीठ को कुर्सी न बनाया जाय। एक प्रथा ये थी कि किसी जानवर को बांध कर उसका निशाना बनाया जाता और तीर अन्दाज़ी का अभ्यास किया जाता। आप सल्ल0 ने उस पर भी पाबन्दी लगाई।

(2) एक बार एक ऊँट रास्ते में आप सल्ल0 की नज़र से गुज़रा जिसका पेट और पीठ भूख के कारण मिल गए थे तो आप सल्ल0 ने कहा, इन बेजुबानों के बारे में खुदा से डरो।

घर वालों से प्रेमः–

हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि0 से आप सल्ल0 को बड़ी महब्बत थी। आप कहा करते कि ये गुलदस्ते हैं। हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 के घर जाते तो कहते कि मेरे बच्चों को लाना। वह उन्हें लातीं तो आप सल्ल0 उन्हें सूँघते और सीने से लिपटा लेते।

रोगियों का कुशल–क्षेमः–

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरीजों का हाल–चाल लिया करते और कुशल–क्षेम पूछते थे। इस सम्बन्ध में दोस्त– दुश्मन, मुस्लिम–ग़ैर मुस्लिम, अमीर–ग़रीब और दास आदि सब बराबर थे। आप सल्ल0 हर एक के पास ख़ैरियत मालूम करने जाते थे। एक यहूदी गुलाम बीमार हुआ तो आप सल्ल0 उसकी ख़ैर–ख़ैरियत लेने पहुँचे।

दिलासा और सहानुभूतिः–

एक बार एक आदमी बीमार पड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुशल–क्षेम पूछने के लिए कई बार उसके यहां गए। जब उसका देहान्त

हो गया तो लोगों ने इस आशंका से कि आप सल्ल0 को अंधेरी रात में आने से परेशानी होगी, सूचना नहीं दी और दफ़न कर दिया। सुबह जब ख़बर मिली तो आप सल्ल0 ने शिकायत की और उसकी क़ब्र पर जा कर मगफ़िरत की दुआ की।

(2) एक हब्शी मस्जिद में झाड़ू दिया करता था, उसका देहान्त हो गया तो लोगों ने आप सल्ल0 को सूचना न दी मानो लोगों ने उसे तुच्छ जान कर ऐसा किया। एक दिन आप सल्ल0 ने उसका हाल पूछा, लोगों ने बताया कि उसका देहान्त हो गया। आप सल्ल0 ने उसकी क़ब्र का पता पूछा और वहां जा कर क़ब्र पर जनाज़े की नमाज़ पढ़ी।

❖❖❖

जारी.....

नाकामियाँ और .....

किया, मैं दारुल उलूम के माहद का हेड मुक़र्रर हुआ 1997 ई0 में रिटायर्ड हो गया लेकिन मुझे काम से हटाया नहीं गया, मुझे हेडमास्टरी से अलग करके ''शोबा तामीर व तरक़्क़ी'' में मुआविन ''नाज़िरे शोबा'' नियुक्त किया गया, अब तक उसी पद पर हूँ, सन् 2001 ई0 में जब ''सच्चा राही''प्रकाशित हुआ तो मुझे उसका एडिटर बनाया गया यह काम भी अब तक मेरे सिपुर्द है, जब प्रोफेसर अतहर हुसैन को मोतमद माल बनाया गया तो मुझे मुआविन सिक्रेट्री मजलिसे सहाफ़त व नशरियात भी नियुक्त किया गया, इसके सिक्रेट्री प्रोफेसर साहब हैं, यह सारे काम मैं अब तक कर रहा हूँ, अल्लाह मेरी मदद करे, जब तक ज़िन्दा रहूँ इस्लाम पर रहूँ और ईमान पर खात्मा हो।

आमीन

❖❖❖

सहाबा का मक़ाम व.....

उनका सच्चा दिल, उनकी बे तकल्लुफ ज़िन्दगी, उनकी बे नफ़्सी, खुदा तर्सी, उनकी पाक बाज़ी, पाकीज़गी, उनकी शफक़त व राफत, और उनकी शुजाअत व जलादत, उनका ज़ौके इबादत और शौक़े शहादत, उनकी शहसवारी और उनकी शबे जिन्दादारी, उनकी सीम व ज़र से बे परवाई और उनकी दुन्या से बे रगबती, उनका अदल, उनका हुस्ने इन्तिज़ाम दुन्या की तारीख में अपनी नज़ीर नहीं रखता, नुबूवत का कारनामा यह है कि उसने जो इन्सानी अफराद तैयार किये, उनमें एक एक फर्द ऐसा था जो अगर तारीख की मुतवातिर शहादतें न होतीं तो एक शाइराना तखय्युल और एक फ़र्जी अफ़्साना मालूम होता, लेकिन अब वह एक तारीखी हक़ीक़त और एक मुसल्लमुस्सुबूत वाकिआ है जिसमें शक़ की कोई गुंजाइश नहीं।

जारी.....

❖❖❖

हज़रत अनस बिन मालिक अंसारी रज़ि०

—अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा

अनस बिन मालिक रज़ि० को उनकी मां गुमैसा ने उसी वक़्त कलिमा—ए—हक़ अर्थात ''मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं'', पढ़वा दिया था जब उन्होंने लुंगी बांधना भी नहीं सीखा था। गुमैसा ने आप सल्ल० की बातें अपने नन्हें बेटे को सुना—सुना कर उसके दिल को आप सल्ल० के प्रेम से भर दिया था। अनस भी आप सल्ल० का नाम सुन—सुन कर ही आपसे प्रेम करने लगे थे। इसमें ताज्जुब की कोई बात भी नहीं क्योंकि कभी कभी आंखों से पहले कानों को किसी से प्यार हो जाता है अनस हमेशा सोचा करते थे कि मक्का जा कर आपके दर्शन कर आएं या फिर खुद आप सल्ल० मदीना आ जाएं तो आपके दीदार से अपनी आंखों को प्रकाशमान कर लें।

ज़ियादा वक़्त नहीं गुज़रा था कि यसरिब में यह ख़बर फैल गयी कि अल्लाह के नबी सल्ल० अबू बक्र रज़ि० के साथ बहुत जल्द यसरिब पहुंच रहे हैं। इस ख़बर से हर घर खुशियों का चमन और हर दिल खुशियों का गुलशन बन गया। आंखों और मन के पंछी उस रास्ते पर बैठ गये जिस रास्ते से नबी सल्ल० और उनके दोस्त आ रहे थे।

यसरिब के बच्चों में भी नबी सल्ल० के दर्शन पाने की मासूम चाहत समुद्र की लहरों की भांति हिचकोले खा रही थी। हर सुबह कोई कह देता कि रसूलुल्लाह सल्ल० आ गये, और बच्चे उस रास्ते पर दौड़ लगा देते। अनस भी उन बच्चों में एक होते, लेकिन जब पता चलता कि आप सल्ल० अभी नहीं आये हैं, तो अनस का मासूम दिल टूट जाता और वे दुखी हो कर वापस लौट आते।

एक सुबह, जो बहुत सुनहरी थी, यसरिब की गलियों में कुछ लोगों ने एलान किया कि मुहम्मद सल्ल० और उनके साथी यसरिब के बहुत क़रीब आ गये हैं। ऐलान सुन कर सारे लोग उस रास्ते की ओर दौड़ पड़े जिस पर चल कर आप सल्ल० आने वाले थे। उनके साथ बहुत से बच्चे भी थे जिनके दिल में नबी सल्ल० को देखने की तमन्ना खुशी बन कर उनके मुखड़े से ज़ाहिर हो रही थी। अनस बिन मालिक अंसारी उन बच्चों में सबसे आगे—आगे थे।

अल्लाह के रसूल सल्ल० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० यसरिब पहुंच चुके थे और रास्ते के दोनों किनारों पर खड़े लोगों और बच्चों की पंक्तियों के बीच से गुज़र रहे थे। उधर औरतें और बच्चियां अपने—अपने घर की

छतों पर चढ़ कर आप सल्ल0 को देखने का प्रयास कर रही थीं और एक दूसरे से पूछ रही थीं उनमें नबी सल्ल0 कौन हैं? वह एक ऐसा पावन दिन था जिसे अनस बिन मालिक रज़ि0 जीवन भर याद करते रहे।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 मदीने आ कर रहने लगे तो एक दिन गुमैसा रज़ि0 अपने बेटे अनस को आपके पास ले आयीं और आपको सलाम करने के बाद कहने लगीं ''ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0! मदीने का कोई पुरुष या महिला ऐसी बाक़ी नहीं जिसने आपको कुछ न कुछ तोहफ़ा पेश न किया हो। बस मैं ही एक ऐसी अभागिन हूं जिसके पास आपको भेंट करने के लिए इस बेटे के सिवा कुछ भी नहीं। आप इसे अपने पास रख लें, यह आपकी सेवा करेगा।

आप सल्ल0 ने मुस्कराते हुए अनस रज़ि0 को देखा, उनके माथे पर अपना मुबारक हाथ फेरा, उनके बालों की चोटियों को अपनी उंगलियों से छुआ और उनको अपने घर का एक सदस्य बना लिया।

जिस वक़्त अनस रज़ि0 ने अपने आपको नबी सल्ल0 की सेवा में समर्पित किया उस वक़्त उनकी आयु दस साल थी। वे उस समय तक आपके सेवक रहे जब तक आप जीवित रहे। इस प्रकार उनको पूरे दस साल तक आप सल्ल0 की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त रहा। इस अवधि में उन्होंने आपके सद्गुणों के समुद्र से ज्ञान तथा आचरण के अनगिनत मोती चुने, आपकी हदीसों को याद किया और आपके उन परिस्थितियों एवं राज़ों से वाक़िफ़ हुए जिन्हें उनके अलावा कोई और नहीं जान सका।

अनस बिन मालिक रज़ि0 से आप सल्ल0 का ऐसा गहरा एवं स्नेहपूर्ण मामला रहा जैसा बाप और बेटे में भी नहीं होता। आपके उन सद्गुणों का समावेश अनस रज़ि0 ने अपने अन्दर किया जिन पर एक दुन्या रश्क कर सकती है। आइए इस बाबत हम खुद अनस रज़ि0 की ज़ुबानी कुछ सुनते हैं, क्योंकि वही इसको अच्छी तरह बयान कर सकते हैं। वे कहते हैं–

''अल्लाह के रसूल सल्ल0 तमाम लोगों में सबसे अधिक सदाचरण वाले, सबसे ज़ियादा उदार दिल और सबसे ज़ियादा कृपालु थे। एक दिन आपने मुझे किसी काम से भेजा। मैं रास्ते में बच्चों के साथ खेलने में इतना व्यस्त हो गया कि आपका काम भूल गया। बहुत देर बाद अचानक मुझे आभास हुआ कि कोई मेरे पीछे खड़ा है और मेरा कपड़ा हौले से खींच रहा है। मैंने मुड़ कर देखा तो पाया कि आप सल्ल0 खड़े–खड़े मुस्करा रहे हैं। फिर आपने मुझ से कहा–''उनैस! मैंने जो काम तुम्हें दिया था, कर लिया?''

मैंने हकलाते हुए कहा ''हाँ, अभी जा रहा हूं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0।''

अल्लाह की क़सम! मैंने

आपकी दस साल तक सेवा की। इस लंबी अवधि में आपने कभी यह नहीं कहा कि अनस! यह तुमने क्यों किया या तुने ऐसा क्यों नहीं किया।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 हज़रत अनस रज़ि0 को कभी प्यार से ''उनैस'' या कभी ''ऐ मेरे बेटे'' कह कर पुकारा करते थे। आप सल्ल0 उन्हें अच्छे–अच्छे उपदेश भी दिया करते थे। उन्हीं में से कुछ निम्नलिखित हैं–

० ''ऐ बेटे! तुम्हारी सुबह और शाम अगर इस हाल में हो कि तुम्हारे दिल में किसी के लिए जलन तथा धोखा न हो तो ऐसा अवश्य करो।''

० ''बेटे! यह मेरी सुन्नत है। जो मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करेगा तो इसके मायने यह हैं कि वह मुझ से प्रेम करता है और जो मुझ से प्रेम करेगा वह जन्नत में मेरे साथ होगा।''

० ''बेटे! जब तुम अपने घर में प्रवेश करो तो घर के लोगों को सलाम करो, इससे तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बरकत हासिल होगी।''

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 आप सल्ल0 के निधन के बाद अस्सी साल से अधिक ज़िन्दा रहे। इस अवधि में अल्लाह के रसूल सल्ल0 के ज्ञान को पूरी लगन के साथ दुन्या में फैलाया, आपकी सुन्नतों का प्रचार–प्रसार किया और आपकी शिक्षाओं को लोगों तक पहुंचाया वे जीवन भर ज्ञान के क्षेत्र में मुसलमानों के पेशवा रहे। जब भी कोई धार्मिक मसला पेश आता या लोग किसी दीनी मसले को समझ नहीं पाते, तो अनस रज़ि0 के पास ले आते थे और अनस रज़ि0 उसे आसानी से हल कर देते थे।

एक बार की बात है, दीन के सिलसिले में अपने दिल में संदेह रखने वाले कुछ लोगों के बीच इस बात पर बहस होने लगी कि प्रलय के दिन आप सल्ल0 का हौज़ महशर में होगा या नहीं? आख़िर उन्होंने अनस रज़ि0 के सामने इस मसले को पेश किया। आपने फ़रमाया ''मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं उस समय तक जीवित रहूंगा जब तुम जैसे लोग हौज़ के होने न होने पर बहस करने लगेंगे। मैंने बहुत सी ऐसी बूढ़ी औरतों को देखा है जिनमें से हरेक अपनी हर नमाज़ में अल्लाह से यह दुआ अवश्य करती थी कि अल्लाह उसे नबी सल्ल0 के हौज़–ए–कौसर का पानी पिलाए।

अनस रज़ि0 ने अपना पूरा जीवन अपने स्वामी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की यादों में गुज़ारा। जिस दिन वे आप सल्ल0 से पहली बार मिले थे तो बहुत खुश हुए थे और जिस दिन आपका देहांत हुआ था, उस दिन वे बहुत रोये भी थे। वे आप सल्ल0 की कथनी एवं करनी पर अमल करने को अपने जीवन का सार समझते थे। आप सल्ल0 ने जिस चीज़ को पसन्द किया उन्होंने भी पसन्द किया और जिस चीज़ को नापसन्द किया उन्होंने भी नापसन्द किया। वे आप सल्ल0 के जीवन के दो पलों को बहुत ज़ियादा याद किया करते थे।

एक आपसे पहली बार मिलने के दिन को, दूसरा आपके निधन के दिन को। जब पहला दिन उन्हें याद आता तो खुशी से झूम जाते और जब दूसरा दिन याद आता तो खुद भी रोते और दूसरों को भी रुलाते थे।

हज़रत अनस रज़ि0 यह बात बार–बार कहा करते थे कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को उस दिन भी देखा जब आप हमारे यहां आये थे और उस दिन भी देखा जब आपका हमारे सामने निधन हुआ था। इन दो दिनों की तरह मैंने कोई तीसरा दिन नहीं देखा। जिस दिन आप हमारे यहां आये थे, उस दिन ऐसा लगा था जैसे सब कुछ रौशन हो उठा है और जिस दिन आपका निधन हुआ उस दिन ऐसा लग रहा था जैसे हर ओर अंधेरा छा गया हो। आप सल्ल0 पर मेरी अंतिम नज़र सोमवार के दिन पड़ी थी जब आपके कमरे का परदा हटा दिया गया था। मैंन आपका चेहरा देखा तो ऐसा लगा था जैसे कुरआन का एक पन्ना हो। लोग उस दिन अबू बक्र रज़ि0 के पीछे खड़े थे और आप सल्ल0 को देख रहे थे। क़रीब था कि लोग अपनी जानें त्याग दें लेकिन अबू बक्र रज़ि0 ने उन्हें शांत रहने का आदेश दिया। उसी दिन आख़िरी पहर में आप सल्ल0 अपने रब से जा मिले। हमारी नज़रों ने आपके चेहरे से ज़ियादा अजीब दृश्य नहीं देखा था जब हम आप सल्ल0 पर मिट्टी डाल रहे थे।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने कई बार अनस रज़ि0 के लिए दुआ की थी कि ऐ अल्लाह! तू अनस के माल और संतान में बरकत प्रदान कर तथा उसे लंबी आयु दे।

अल्लाह ने आप सल्ल0 की यह दुआ क़बूल कर ली। अनस रज़ि0 अंसारियों के सबसे ज़ियादा धनवान और सबसे ज़ियादा संतान वाले व्यक्ति बन गये। उनकी संतानों की तादाद (पोते–पोतियों को मिला कर) सौ से ज़ियादा थी। आयु भी उन्होंने एक सौ तीन साल की पायी।

अनस रज़ि0 की बहुत इच्छा थी कि उन्हें प्रलय के दिन आप सल्ल0 की शिफ़ाअत प्राप्त हो जाए। वे बार–बार कहा करते थे कि मुझे आशा है कि जब मैं प्रलय के दिन आप सल्ल0 से मिलूंगा तो कहूंगा "ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0! यह है आपका छोटा–सा सेवक उनैस!

जब अनस रज़ि0 मृत्युशैया पर आ गये तो अपने घर के लोगों को ताकीद कर दी कि मुझे "लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" अर्थात अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं", पढ़ाते रहो। उन्होंने यह भी वसीयत कर दी कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 की छोटी सी लाठी जो उनके पास थी, को भी मेरे साथ क़ब्र में रख दिया जाए। वसीयत के अनुसार वह लाठी उनके पहलू में रख दी गयी।

शेष पृष्ठ ...40...पर

मालद्वीप एक मुस्लिम देश

—सैय्यद इनायतुल्लाह नदवी

हिन्द समाज में भारत वर्ष के दक्षिण पच्छिम में मालद्वीप एशिया महाद्वीप का एक बहुत छोटा सा देश है जो क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों एतिबार से सबसे छोटा देश है, यह एक हज़ार 191, बहुत ही छोटे छोटे टापुओं पर आधारित द्वीप समूह है। इस देश में तमाम टापू समुद्री स्तर से केवल 6 फिट की ऊँचाई पर हैं, यह खतरा बताया जा रहा है कि पूरा देश समुद्र में डूब कर अपना वजूद खो बैठेगा। मालद्वीप शत प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाला देश है, यहां इस्लाम का पहला परिचय अरब सौदागरों द्वारा हुआ, फिर 1153 ईस्वी में ईरान से आने वाले एक बुजुर्ग अब रकाब तबरेज़ी ने बाक़ायदा पूर्ण रूप से इस्लाम की इशाअ़त (प्रचार) का काम किया, उनकी कोशिशें से यहां के एक बुद्धिस्ट राजा धोवीमी ने इस्लाम कुबूल कर लिया, उसने अपना नाम मुहम्मद आदिल रखा, उस वक़्त कुछ मालद्वीपी हल्क़ाबगोश इस्लाम हुए अर्थात इस्लाम में दाख़िल हुए, फिर 1314 ई0 में एक और बुजुर्ग अफ़रीक़ा से आये जिनका नाम अबुल बरकात बरबरी था, उनकी दावती कोशिशों से यहां के तमाम बाशिन्दों ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

इब्ने बतूता का नाम सय्यद सुलैमान नदवी रह0 ने तहरीर फ़रमाया है कि जिस ज़माने में ''धर्मान्त शुनो राजा'' मालद्वीप का बादशाह था, उस वक़्त फ़कीह अबुल बरकात यहां तशरीफ़ लाये वह एक बुढ़िया के घर मेहमान थे, मालद्वीप में दस्तूर था कि जब समुद्र में एक जिन दिखाई देता था तो एक कुंवारी लड़की को कुरआ अन्दाज़ी से मंदिरों में तन्हा छोड़ दिया जाता था, रात को वह जिन आ कर उस लड़की की इसमतदरी करता था, वह लड़की मर जाती थी, सुब्ह लोग उसे ले कर जला देते थे, अबुल बरकात की आमद के मौक़े पर भी वह ''जिन'' समुद्र में दिखाई दिया, कुरआ अन्दाज़ी में उस बुढ़िया की लड़की का नाम निकला जिसके घर में अबुल बरकात ठहरे हुए थे, बुढ़िया घबराई कि उसकी लड़की को मरने के लिए, मंदिर में छोड़ दिया जायेगा। अबुल बरकात ने फ़रमाया कि घबराओ नहीं मैं तदबीर करता हूं चुनांचि वह खुद औरत का लिबास पहन कर मंदिर गये और वहीं कुर्आन मजीद की तिलावत करते रहे, रात को वह जिन कमरे के पास आया, उसने एक शख्स को कुर्आन की तिलावत करते हुए देखा तो वापस समुद्र में लौट गया, सुब्ह जब लोग लड़की की लाश देखने गये तो वहां एक मुसलमान को कुर्आन मजीद की तिलावत करते हुए देखा, यह करामत

देख कर बुद्धिस्ट राजा सान्त शानोराज़ा मुसलमान हो गया उसने अपना नाम सुलतान अहमद शानों राज़ा रखा, फिर पूरा मुल्क इस्लाम में दाखिल हो गया।

1558 ई0 में पुरतगाल के पुरतगीज़ी यहां पहुंचे और उन्होंने मालद्वीप के तमाम टापुओं पर कब्ज़ा कर लिया, 1654 ई0 में एक दूसरे यूरोपीय मुल्क हॉलैण्ड के डचों ने पुर्तगालियों को प्राजित करके यहां अपना क़बज़ा कर लिया। 1887 ई0 में बरतानिया के अंग्रेज़ों ने डचों से मालद्वीप को छीन कर वहां बालादस्ती क़ायम कर दी, ग़र्ज की 1558 से 1965 ई0 तक 407 साल मालद्वीप तीन विभिन्न यूरोपियन साम्राजय क़ौमों के तसल्लुत में रहने के बाद आज़ाद हुआ, इस बीच यहां की बादशाहत बराएनाम रस्मी तौर पर बाक़ी रही जो विरासतन मुन्तक़िल होती रही, जबकि हुकूमत व सत्ता के अधिकार साम्राजी क़ौमों के हाथों में रहे।

1965 ई0 अंग्रेज़ों ने हुकूमत की बागडोर उस समय के बादशाह सुल्तान अमीर मुहम्मद फ़रीद वैदी के हवाले कर दी, सुल्तान ने मुल्क के अन्दर रिफ्रन्डम करवाया कि बादशाहत बाक़ी रहेगा डिमोक्रेसी के हक में राय दी, चुनांचि 11 नवम्बर 1968 ई0 को मालद्वीप जमहूरिया बन गया, अमीर मुहम्मद फ़रीद वैदी तख़्त व ताज से दस्तबरदार हो गये, अमीर इब्राहीम मुल्म के पहले सदर जमहूरिया और अहमद ज़की प्रधानमंत्री बनाये गये।

1978 ई0 में मामून अब्दुल क़य्यूम मालद्वीप के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए जो लगातार 30 साल तक इस पद पर विराजमान रहे, 2008 ई0 के एलक्शन में मुहम्मद नशीद ने मामून अब्दुल क़य्यूम को प्राजित करके मालद्वीप के राष्ट्रपति बन गये लेकिन 2012 ई0 में फौज ने उनके ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी और उनको इस्तिफा देने पर मजबूर कर दिया 2013 ई0 के राष्ट्रपति के चुनाव में अब्दुल्लाह यामीन देश के राष्ट्रपति घोषित हुए, परन्तु वह डिकटेटर और तानाशाह बन गये और विरोधी पार्टियों के लीडरों को गिरफ़्तार करके जेल में डालना शुरु किया, उसके प्रतिक्रिया में सारी अपोज़ीशन पार्टियां अब्दुल्लाह यामीन के विरुद्ध एकजुट हो गईं, 2018 ई0 में राष्ट्रपति के चुनाव में विरोधी पार्टियों के उम्मीदवार इब्राहीम मुहम्मद सालेह ने 58 प्रतिशत वोट लेकर सफलता प्राप्त की, उन्होंने 17 नवम्बर 2018 ई0 को मालद्वीप के सातवें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण की।

मालद्वीप दुन्या का अकेला एक मात्र देश है जहां का कोई नागरिक ग़ैर मुस्लिम नहीं है, यहां के क़ानून के अनुकूल वही व्यक्ति मालद्वीप का नागरिक बन सकता है जो सुन्नी मुसलमान हो। मालद्वीप की अदालतों में नियुक्त होने वाले जजो के लिए अनिवार्य है कि वह शरई क़वानीन पर पूर्ण ज्ञान रखते हों ताकि फ़ैसला करते समय जहां कहीं मुल्की दस्तूरे (संविधान) या क़ानून उनकी मदद न करता हो तो वह इस्लामी शरीअ़त के मुताबिक़

फ़ैसले करें, मालद्वीप का राष्ट्रपति जनता के वोट से पांच साल के लिए निर्वाचित होता है, वह पूर्ण अधिकार रखता है वही शासक का उत्तरदायी होता है, यहां प्रधानमंत्री का पद नहीं है, 85 सदस्यों पर आधारित एक पार्लियामेंट है जिसे अवामी मजलिस (सार्वजनिक समिति) कहा जाता है, उस समिति का सिद्धान्त कुरआन शरीफ़ की ''आयत अमरुहुमशूरा बैनहुम'' अपने मामले आपस के परामर्श से चलाते हैं। यह समिति विधान सभा का अधिकार रखती है चूंकि इस्लाम यहां का सरकारी मज़हब है इसलिए इस्लामी सिद्धान्तों के विरुद्ध यहां क़ानून साज़ी नहीं की जा सकती, सार्वजनिक समिति के विरुद्ध यहां क़ानून साज़ी नहीं की जा सकती, सार्वजनिक समिति मियाद भी पांच साल है, इसमें सदस्य 85 क्षेत्रों से बहुसंख्यक वोट के आधार पर निर्वाचित होते हैं, सार्वजनिक समिति राष्ट्रपति को इस्लामी सिद्धान्तों या संविधान के विरुद्ध काम करने के कारण पद से हटा सकती है। इन सब बातों के बावजूद भूत पूर्व राष्ट्रपति माननीय अब्दुल क़य्यूम ने अपने 30 वर्षीय कार्यकाल में पूरी डिक्टेटरशिप के साथ मुसलमानों को बेदीन और कमपोजिस्ट बनाने की पूरी कोशिश की।

❖❖❖

हज़रत अनस बिन .....

हज़रत अनस बिन मालिक अंसारी रज़ि0 को अल्लाह की नेमतें मुबारक हों। उन्हें दस साल अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा करना भी मुबारक हो। अल्लाह उन पर कृपा की बारिश करे कि वे आप सल्ल0 की हदीसों को रिवायत करने वाले तीन सबसे बड़े रावियों में से एक हैं। शेष दो अबू हुरैरा रज़ि0 और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 हैं। अल्लाह उनकी मां गुमैसा रज़ि0 और खुद उनको इस्लाम और मुसलमानों की तरफ़ से सर्वश्रेष्ठ बदला प्रदान करे।

❖❖❖

इब्रत व बसीरत.....

काम्याब बनाने का जज़्बा उसके अन्दर मफक़ूद हो जाता है।

साल हिजरी का मुबारक आगाज़ हम से इसी बात का मुतालबा करता है, वह हम से हिजरत के औसाफ़ व खुसूसियात का तालिब है, मौजूदा हालात में जो हर मुल्क के मुसलमानों को दरपेश है, इस बात की ज़रूरत इनतिहाई शिद्दत से महसूस होती है कि हम बार बार सीरत के मुखतलिफ पहलुओं का जाइज़ा लेते रहें, और उसमें हम अपने लिए इबरत व अमल के नमूने तलाश करते रहें, इस मुबारक सीरत का सब से रोशन, ताबनाक और अहम पहलू हिज़रत का वाकिआ है, जो हर दौर में मुसलमानों की रहनुमाई के लिए बिलकुल काफी और वह वाक़ई नमूनए अमल और उसवए नबवी है।

❖❖❖

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلماء
ص.ب. ٩٣/٠، تیغورمارغ،
لکناؤ-٢٢٦٠٠٧ یوبی (الهند)

Date 09/09/2018 ——— التاريخ ٢٨/ذی الحجہ ١٤٣٩ھ

باسمہٖ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो0 अतहर हुसैन	मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखे उर्दू जुम्ले हिन्दी जुम्लों की मदद से पढ़ये

सिहत के लिए वरज़िश बहुत ज़रूरी है

صحت کے لئے ورزش بہت ضروری ہے۔

टहलना, दौड़ना, दण्ड बैठक लगाना बेहतरीन वरजिशें हैं

ٹہلنا، دوڑنا، دنڈ، بیٹھک لگانا بہترین ورزشیں ہیں۔

कम से कम सुब्ह व शाम 15,15 मिनट ज़रूर टहलें

کم سے کم صبح وشام ۱۵،۱۵ منٹ ضرور ٹہلیں۔

नमाज़ों के सहीह कियाम, सहीह रुकूअ़ सहीह सज्दों
और सहीह क़अ़दा से वरजिशों के फाइदे भी हासिल होते हैं।

نمازوں کے، صحیح قیام، صحیح رکوع، صحیح سجدوں اور صحیح قعدہ سے
ورزشوں کے فائدے بھی حاصل ہوتے ہیں۔

रूह को जो खुशी और दिल को जो सूकून नमाज़ों से हासिल होता है
वह दूसरे किसी अमल से हासिल नहीं हो सकता।

روح کو جو خوشی اور دل کو جو سکون نمازوں سے حاصل ہوتا ہے
وہ دوسرے کسی عمل سے حاصل نہیں ہوسکتا۔

लेकिन नमाज़ सिर्फ और सिर्फ अल्लाह की रिज़ा के लिए पढ़ी जाती है

لیکن نماز صرف اور صرف اللہ کی رضا کے لئے پڑھی جاتی ہے۔

दिन में पाँच बार वुज़ू करने में तिब्बी फाइदे भी हैं।

دن میں پانچ بار وضو کرنے میں طبی فائدے بھی ہیں۔

लेकिन वुज़ू अल्लाह के हुक्म की तअ़मील में किया जाता है।

لیکن وضو اللہ کے حکم کی تعمیل میں کیا جاتا ہے۔

RNI No. UPHIN/2002/794
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2018 To2020
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 18 - Issue 10

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-Mail: sachcharahi@nadwa.in

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Designed By Saleh Mahmood, Lko. Mobile : 7860632916